

#### मोहरिते सच्चवयणस्स पलिमंथू ( ठाणंगसूत्त, ५२९ ) 'मुखरता सत्यवचननी विधातक छे'

प्राकृतभाषा अने जैन साहित्य विषयक संपादन, संशोधन, माहिती वगेरेनी पत्रिका

संकलनकार : आचार्य विजयशीलचन्द्रसूरि • हरिवल्लभ भायाणी

23



कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य नवम जन्मशताब्दी स्मृतिसंस्कार शिक्षणनिधि अहमदाबाद १९९९

ł

मोहरिते सच्चवयणस्स पलिमंथू (ठाणंगसुत्त , ५२९) 'मुखरता सत्यवचननी विघातक छे'



### प्राकृतभाषा अने जैन साहित्य विषयक संपादन, संशोधन, माहिती वगेरेनी पत्रिका



संपादको : विजयशीलचन्द्रसूरि हरिवल्लभ भायाणी



# कलिकालसर्वज्ञ श्रीहेमचन्दाचार्य नवम जन्मशताब्दी स्मृति संस्कार शिक्षणनिधि अहमदावाद १९९९

# अनुसंधान १३

संपर्क : हरिवल्लभ भायाणी २५/२, विमानगर, सेटेलाईट रोड, अहमदावाद – ३८० ०१५.

- प्रकाशक : कलिकालसर्वज्ञ श्रीहेमचन्द्राचार्य नवम जन्मशताब्दी स्मृति संस्कार शिक्षणनिधि, अहमदावाद , १९९९
- किंमत : रू. ३५-००

प्राप्तिस्थान :

सरस्वती पुस्तक भंडार ११२, हाथीखाना, रतनपोल, अहमदावाद - ३८० ००१.

मुद्रक

:

राकेश टाइपो-डुप्लिकेटींग वर्क्स राकेशभाई हर्षदभाई शाह २७२, सेलर, बी.जी. टावर्स, दिल्ली दरवाजा बहार, अहमदावाद – ३८० ००४. (फोन : ६४४ ९२००)

# सम्पादकीय निवेदन

ताजेतरमां पॅरिसथी फेंच विदुषी बहेनो मेंडम कॅलेट कैय्या तथा डॉ. नलिनी बलबीर भारतप्रवासे आव्यां हतां. मुलाकात दरम्यान थयेली वातचीत– मां 'अनुसंधान'ना प्रकाशन तेम ज तेमां प्रकाशित थती मूल्यवान सामग्री परत्वे ऊंडा परितोषनी लागणी तेमणे प्रगट करी हती. स्वाभाविक रीते ज जैनोलोजी अने प्राकृत वगेरे भाषाओना तज्ज्ञोनी आवी लागणीथी अमने पण अनहद संतोष अनुभवायो.

पाछला थोडाक अंकोनी तुलनाए प्रस्तुत अंक थोडो नाना कदनो थयो छे. तेमां बहारथी प्राप्त थयेल सामग्रीनी अल्पता तेम ज संपादकोनी केटलीक व्यस्तता कारणभूत छे.

– संपादको

# अनुक्रम

| १.  | कामरूपपञ्चाशिका   | विजयशीलचन्द्रसूरि            | १-१२   |
|-----|---|------------------------------|--------|
| २.  | श्रीपृथ्वीचन्द्रसूरिकृतयतिशिक्षापञ्चाशिका                       | विजयशीलचन्द्रसूरि            | १३-१८  |
| રૂ. | अज्ञातकर्तृकचतुर्विंशतिजिननमस्कार -<br>काव्यो                   | विजयशीलचन्द्रसूरि            | १९-२५  |
| κ.  | श्रीवासुपूज्यस्वामी - प्रतिष्ठविधिसूचक<br>स्तवन                 | सं. साध्वी दीप्तिप्रज्ञाश्री | २६-४९  |
| ц.  | प्राकृत मुक्तक कविताना एक अमूल्य<br>ग्रंथनी उपलब्धि - तारागण    | हरिवल्लभ भायाण्प्रे          | 40-42  |
| ૬.  | केटलाक अल्पज्ञात के अज्ञात मूळना<br>गुजराती शब्दप्रयोगोनी चर्चा | हरिवल्लभ भायाणी              | ષરૂ-५૬ |
| ७.  | Sporadic Notes on Some Terms<br>from the Nrttaratnāvali         | H. C. Bhayani                | 49-49  |

### कामरूपपञ्चाशिका

- विजयशीलचन्द्रसूरि

प्रस्तुत कृति योगशास्त्र तेमज स्वरोदयशास्त्रने लगती, प्राकृत भाषानी एक अपूर्व कृति होवानुं मालूम पडे छे. नाडीओ अने तत्त्वो वगेरेनुं ज्ञान तेमज तेना पर अंकुश प्राप्त करनार मनुष्यने केवी केवी सिद्धिओ तथा फलनी प्राप्ति थाय छे, तेनुं आमां विशद निरूपण थयुं छे. आने 'गाहापंचासिया' (गाथा पंचाशिका) (गा. ४, क्षे.गा. ८८/३) तरीके कृतिमां ओळखावी छे. आना कर्ता कोण हशे, ते हजी स्पष्ट नथी थतुं. परंतु, गा. ४ मां 'जोइणिविंद-योगिवृन्द' एवो, गा. २३, २७, ४५, क्षे.गा. ८८/१, आमां 'जोइविंद-योगिवृन्द' एवो क्षे.गा. ८८/२मां 'कामरूपपीठनी योगिनी' एवो, क्षे.गा. ८८/२ मां 'योगिनीवृंद' एवो योगिनी-'योगीन्द्रकथित' एवो उल्लेख छे, ते जोतां कामरूप-प्रदेशमां वर्तती कोई योगविद्या-पीठना योगी/योगिनीओए रचेल आ रचना हशे तेवी अटकळ थई शके तेम छे.

आ विषय मारा माटे तद्दन अज्ञात छे. मात्र प्राकृत कृति होवाने लीधे ज एना प्रति ध्यान आकर्षायुं, अने भाषानी दृष्टिए आवड्युं तेवुं संपादन करी अहीं मूकी छे. आना विषय उपर विशेष प्रकाश तो ते विषयना तज्ज्ञो ज पाडी शके.

मारी पासे आनी २ हस्तप्रतिओ हती, तेना आधारे आ वाचना तैयार करी छे.

| विप्फुरइ नहसमग्ग                      |
|---------------------------------------|
| चिंतियमित्ते सयलं                     |
| नाइज्जइ जेण फुडं                      |
| नाणं तिविहपयारं                       |
| इड-पिंगल-मज्झत्थं                     |
| इय कामरूँवसंठिय                       |
| दिव्वं नाणपहाणं                       |
| दूँयलक्खणस्स पढमं                     |
| विसनिग्गहणंतइयं                       |
| दूरा भूचंकमणं                         |
| मंतबलसामत्थं                          |
| एँताहे बहुभेयं                        |
| एँत्ताहे बहुभेयं<br>तिविहपयारं ज्झाणं |
| तव तविए जव जविए                       |
| निंहुहियसयलकम्म                       |
| सियवन्ने विसहरेणं                     |
| थंभइ पीयलवन्नं                        |
| वरुणहुयासणमज्झे                       |
| सँयलब्भासियज्झाणे                     |
| नाहिमूले सत्तिकुंडलि                  |
| जो ज्वाराट आगतमां                     |

सो जयउ जस्स सयलं

| तिहुयणमाबंभनाहिमज्झत्थं ।           |        |
|-------------------------------------|--------|
| नाहेग्गे ज्झाणचिंताएँ               | 11811  |
| तिहुयणमाँबंभभुयणमज्झत्थं ।          |        |
| तं चिय नाणं पवक्खामि                | 11211  |
| मिं(मी)सिय-संकेय-केवलं भणियं।       |        |
| नाइज्झइ गुरूवएसेणं                  | 11311  |
| <b>जोइणिविंदेण</b> जं फुंडं दिट्ठं। |        |
| गाहापंचासियं नाम                    | 11811  |
| बीयं कालस्स लक्खवंचणयं।             |        |
| सिवतत्तं कामतत्तं च                 | 4      |
| दूरा वर्सणं, च दंसणं दूरा ।         |        |
| आइट्ठी विविहसिद्धि(द्धी)ओ           | ६      |
| भूबलसरसत्थकालवित्राणं ।             |        |
| कहैंामि फुडं निसामेह                | 11011  |
| बहुँकालेण हुति सिद्धँयरा।           |        |
| ज्झाणेणें य तक्खणा सिद्धी           | 11211  |
| रत्तावन्नेण हवँई आइट्ठी।            |        |
| मारइ तह किण्हज्झाणेण                | 11911  |
| कुंडलवलियाइं भुयंगरूवेण।            |        |
| जाणिज्जइ संच्छमंघाओ                 | 11१०11 |
| तडितरलतेयभासंती ।                   | ·      |
| सो जाणइ सयलतियलोयं                  | 112211 |

कामरूपपञ्चाशिका ॥

www.jainelibrary.org

कोयंडचक्रमज्झे अइयाँ जो ज्झायइ अर्णंवरयं सिंदूरारुणतेयं जं जं तडितरलतेयनौंसं जवकुसुमसंनिहाणं जो ज्झायइ अणवरयं सवरंखत्ररूच्छं जो जवइ लक्खविहिणा ससिठाणे विसहरणं पावेइ सयलसिद्धी ससिकोडितरलतेया अवहरइ सयलदुरियं अजरामरे सुचके नासइ सुन्नेण धुवं सूत्रं न होइ सूत्रं अवहरइ पावपुन्नं सुन्नद्विए सुसुन्नं सूर-मयंकग्गामे अको भैंगयंकखित्ते वहइ दिणं अह राँई पंच पहा दो मग्गा जत्थ गओ तहिं अच्छइ

| रविकोडितेयभासाए ।                   |                |
|-------------------------------------|----------------|
| सुच्चिय मयणो न संदेहो               | ાારવા          |
| चितेइ तरणिसंकासं।                   |                |
| आणइ दूरहिया नारी                    | <b>।</b> ।१३।। |
| ज्झाणं तियलोयसयलसंखंतं ।            |                |
| सो पावइ जुवइसंघायं                  | ।।१४॥          |
| ईसरपिंडिंदुबिंदुसोहिल्लं।           |                |
| सो पावइ चिंतिया नारी                | ાર્યા          |
| सूरो मारेइ तिहुयणं सयलं ।           |                |
| रविससिमज्झडिएँ नूण                  | ।।१६।।         |
| वरिसंती बंभमंडले सत्ती।             |                |
| जरमरणं वाहिसंघाँयं                  | ୲୲୧୬୲୲         |
| हंँसं ठविऊण सुन्नभावेणें ।          |                |
| जरमरणं वाहिसंघाओ                    | १८             |
| दीसइ सयलं पि तिहुयणं सुन्नं ।       |                |
| सुन्नसहावे गओ अप्पा                 | 11१९11         |
| भरिए भरियं च तिहुयणं सयलं ।         |                |
| सयलकलालंकियं भुवणं                  | ાારગા          |
| बारह संकमणसट्ठिघडियाओ ।             |                |
| एक्नेकं पंच घडियाओ                  | ॥२१॥           |
| **<br>इक्को चिय वहुँइ तिहुयणे सयले। |                |
| सुन्ने सुन्नं वियाणाहि              | ારરા           |

www.jainelibrary.org

| विसम-सम-उभयपक्खा<br>नियनियकाले जाणह               | रवि-ससि मुणिऊण दाहिणं इयरं ।<br>निदि(द्दि)ट्ठं <b>जोइविंदेण</b> | ારગા         |
|---|---|--------------|
| ससिखित्ते समवन्नो<br>जत्थत्थि तत्थ सहँलं          | सूरे विसमक्खरो हवइ जइया।<br>सुन्ने सुन्नं वियाणेह               | แรยแ         |
| पुच्छइ सुन्नम्मि ठिओ<br>नत्थि ति(त्ति) तं वियाणह  | दूओ अत्थि ति(त्ति) भण्गेइ कज्जाइं।<br>होइ धुवं जीवठाणेसु        | ારહા         |
| नट्ठं दट्ठं मूयं पहरिय –<br>पुच्छइ जियेम्मि ट्विओ | जरियं च वाहिसंभूयं।<br>अत्थिंति अ [तं](?) विआणेहि               | ારદા         |
| पढमं चिय सुन्नहरे<br>मुच्छं गओ वि जीवइ            | पच्छा जीवेसु जँइ हवइ दूओ।<br>निद्दिट्ठं <b>जोइविंदेण</b> ्      | ،،<br>اا۲७۱۱ |
| ूपढमं जीर्यंड्राणे पच्छा<br>सो जाणह तह मूओ        | सुन्नम्मि जइ हॅंवइ दूओ।<br>जस्स निमित्ते कया पन्हा              | 112211       |
| जीवपवेसे लाहो<br>सहलं पवेसयौंले                   | हवइ न लाहो विनिग्गए सासे।<br>निग्गमणे मरइ निब्भंतं              | ાારડાા       |
| पुट्ठिट्ठिएण सूरो<br>रवि-ससिखित्तं नाउं           | अँहवा पुरयम्मि संठिओ चंदो।<br>जीयाजीयं वियाणेहिं                | 30           |
| असि-मसि-किसिवाणिज्जे<br>जइ पुच्छइ होइ फलं         | दिक्खा-वीवाह जीवसंठाणे ।<br>सुन्ने हाणी वियाणीहिँ               | ः<br>  ३१    |
| [भरिएसु होइ भरियं<br>सूरमयंकेसु तहा               | रित्तं रित्तेसु नत्थि संदेहो ।<br>जीयाजीयं वियाणेहि             | ાારવાા]      |
| गब्भनिमित्ते पुच्छइ<br>सूरेण य होइ नरो            | सँसि(स)हरट्ठा (ठा)णेसु संठिया जुवई<br>इत्थ वियप्पो न कायव्वो    | ।<br>॥३२॥    |
| सज्जीवे चिरजीवो<br>संगमपवेसयाले                   | मरइ धुवं सुन्नठाणपुच्छाए।<br>जीयाजि(जी)यं वियाणेह               | ॥३३॥         |

एणकमेण य विहिणा सो लहइ सयैलसिद्धी अहवा नियपडिर्बिबं नियच्छा(छा)यादिट्ठीए पिच्छइ नहमज्झगयं जाणिज्जइ तेण फुडं असिरेण च छम्मासं दोवरिसेण व मरणं जो पु(पि)च्छेइ संपुन्नं सो पामई सुहसिद्धी हरिणो अहव विरंची तह जाणिज्जइ मरणं

नत्थि त्ति सुन्नद्वा(ठा)णे अहवा जीवनिमित्ते केंहवि फुडं निर्ब्भंतं जइ कहवि हवइ सूरो मॉसपमाणेण तहा मासेण व छम्मासं दह राँये णव[णव] द्ति दिणे दोवरिसं

अट्ठदिणेच्छवंरिसं

अह परचकागमणं

होइ मयंकम्मि वारए सूरो। जीवँहरे होइ निब्भंतं 113811 कालं नाउण परह-अप्पाणं । निदिँ(दि)हुं जोइविंदेण 113411 दिणमिक्कं पंचराइयं पर्क्खं। जाणह कालं निसामेह ॥३६॥ तेमासं मरइ तहं व पक्खेण। पक्खिकं पंचराएण 113/911 तेवरिसं इक्कराइमाणेण। सुरपवाहे वियाणेहिँ 113211 निसिनाहो जस्स सकंमइ देहे। धणकणगसमिद्धिया जुवई 113511 " नहमज्झे जो वि पिक्खए नूणं। जारिसिया तारिसं रूवं 118011 पुरिसं सुरूवफलिहसंकासं। कालं छम्मासियं नूणं 118811 जंघाहीणेण मरइ वरिसेण। नाइज्जइ बाहुहीणेण 118511 पुरिसं[सं]सुद्धफलहसंकासं। अजरामरसासयं ठाणं 118311 सरिसा निवडंति जत्थ गयणतले । सत्ताहे नत्थि संदेहो 118811

5

जो पिक्खइ अप्पाणं

<sup>\*\*</sup> पनिखकेण य मरणं

इय जाणिऊण कालं अंमुँहियकालसहावे

सुन्ने अमियमयंके

गुरुमि-गंठिनाही

कोदंडे<sup>\*</sup>नहमज्झे

तत्तग्गिकणयतेयं

ज्झाइज्जइ चउवन्नं

बंभकुडीए कुम्मो

ससिकोडितरलतेयाँ

ज्झाइयमाणा गरलं

अट्टदलं सियवन्नं नाहीमज्झम्मि गयं

हंसासणम्मि हंसो

रविकोडितेयभांसं

<sup>???</sup> गलबहुललोलतुहिणं

चिंतिज्जड कंठयले

सिंदूरारुणतेयं तिकोणं

ज्झाणेण य कुणय(इ) वसं

जो ज्झाँणइ अणवरयं

|     | पारमावह संयलवावार        |
|-----|--------------------------|
|     | वरिसंतं चंदमंडलं सलिलं । |
| • . | हरइ विसं कालदट्ठस्स      |
|     |                          |
|     |                          |
|     |                          |

For Private & Personal Use Only

१३१

बंभगंठिमज्झत्थं।

ज्झाणेणवहरइ दुक्खाइं

पउमं चिय सुद्धफलहिसंकासं।

सो च्चिय परिठवह हिययचक्रम्मि।

जाणिज्जइ ज्झाणलक्खाओ 118611 दिप्पंतं पुहइंमंडलं मज्झे। वज्जंकं पढमचकेस 118811 पीडिज्जंतो वि कणयसंकासो। १२१ थंभइ जल-जलण-तुरंग-गयभाविउ(ओ) नूणं 114011 भासंति(ती) बंभमंडले सत्ती। हरइ विसें कालदद्रस्स 114811 अमरवहूसिद्धिसप्पायं 114211

नियसिरहीणं च दप्पणे सहसाँ। निद्दिद्वं जोडविंदेण 118411 पच्छा कालस्स वंचणं कुणह। कि कीरइ कालचिंताएँ 118811 वरिसंतो ज्झाणलक्खाओ। सो च्चिय कालं निवारेइ ାାଟନା हियए कंठेसु तह यें नासग्गे।

ાપરા

114811

1441

14811

114/911

114211

114811

116011

१४५

118811

11६२11

ાદરા

118811

ાદ્ધા

।।६६॥

| १३६                  |                                |
|----------------------|--------------------------------|
| ज्झह(ल)हलियतेससिहिणा | कालानलकीडिपुंजसारिच्छं।        |
| ज्झाइज्जइ नासग्गे    | पाविज्जइ सासयं ठाणं            |
| रवि-ससिकोडिव्व पहे   | ज्झायह कोवंडमज्जगो अप्पा।      |
| विप्फुरइ जेण सहसा    | अट्ठविहो सिद्धिसंघाओ           |
| नहमंडलमज्झत्थो       | अप्पा नहमज्झसंठिओ सयलं।        |
| जाणइ तिविहं नाणं     | अणवरयं भाविओं नूणं             |
| सव्वंगो सव्वगओ       | सव्वं जाणेुइ तिहुयणं सयलं ।    |
| गयणंगणम्मि अप्पा     | भावियमित्तो वियाणेह            |
| नाहंकारं न नहं       | अप्पसहावं च नत्थि वावारं।      |
| लोणं व जलविलीणं      | न हु हवइ पुणन्नेवा सिद्धी      |
| चित्ते बद्धे बद्धो   | सुक्ने सुक्नो वि नत्थि संदेहो। |
| विमलसहावो अप्पा      | मइलिज्जइ मइलिए चित्ते          |
| उंदरदट्ठफणिंदं       | पिच्छइ अहिदट्ठउंदराइं च ।      |
| संकाबद्धसहावो        | मरइ धुयं नत्थि संदेहो          |
| चिंताए सुहभाओ        | नियनियपडिबिंबभाविदो कुसलो।     |
| अणुहूयहूयपव्वय-      | पच्चक्खं पइडए नाणं             |
| दूरा भूचंकमणं        | दूरा सवणं च दंसणं दूरा।        |
| उप(प्प)ज्जइ जत्थ     | धुँवं सुन्नसहावे गओ अप्पा      |
| नवलक्खं नवठाणं       | ज्झाणं नवभावभेयसंजुत्तं ।      |
| अणवरयभावियाणं        | पच्चक्खा होंति सिद्धीओ         |
| ज्झाणेण ये हरइ विसं  | अहवा ज्झाणेण हुवई आइट्ठी।      |
| ज्झाणेण हवइ नाणं     | ज्झाणं तियलोयसारवरं            |

| *48                     | 844                         |        |
|-------------------------|-----------------------------|--------|
| पंचसु ठाणे बीयं         | समरसभावेण भाविओ नूणं।       |        |
| दूरहिउँ(ओ) विआणइ        | जोयणसयसंठिओं नारी           | ାାଟ୍ଡା |
| थंभइ लयारबीयं           | मायाबीयं च कुणइ आइट्ठी।     |        |
| दावइ एव लपिंडे          | पंचसु ठाणेसुंमंब्भसिओ       | 118211 |
| छँदुसरेण व सुन्नं       | सविसग्गं बिंदुनॉयसोहिलं।    |        |
| ज्झाइज्झइ भूमेज्झे      | नाणाविह कुणइ सामत्थं        | 118911 |
| दह अट्ठलिहिय सुन्नं     | पच्छिमबीयस्स फुंसए नूणं।    |        |
| हरहसियफुंकिँयाएँ        | हरइ विसं कालदट्ठस्स         | 119011 |
| बीयमबीयं तिउणं          | मज्झगयं-जस्स नाम संपुन्नं । |        |
| मयभिभलउम्मत्ता          | आणइ दूरट्टिया नारी          | ાહશા   |
| अक्रेण खुद्दकम्मं [सुहक | म्मं] कुणह-रयणिनाहेण।       |        |
| तत्तविसेसेण फुडं        | साहइ मणवंछियं सयलं          | ાહરા   |
| पुहइ-जल-तेय-वाया        | सुन्नं एकेकनाडिमज्झम्मि ।   |        |
| नियनियसहावसहेलं         | जाणिज्जइ सयलचिंताओ          | ।୲ଌଽ୲୲ |
| भज्झेण वहइ पुहइ         | जलणं अहमग्गसंठियं वहइ ।     |        |
| उद्धेण वहइ तेऊँ         | तिज्जगओ वेँहंइ सम्मीरो      | ાહિશા  |
| सुन्नं सुन्नसहावं       | पंचसु तत्तेसु संठियं वँहइ।  |        |
| अँकमयंकेसु तहा          | नहतत्तं सव्वगं जाण          | 116411 |
| पुँहई-जलेण लाहो         | हाणी-महणं च तेय-पवणेण।      |        |
| सुन्नेण होइ सुन्नं      | जं सँयलं चितियं कज्जं       | 119611 |
| पुहइपहावे सूलं          | जीयं जल-मारुयाण चिंताए।     |        |
| तेयपवाहे धाँउं          | सुन्ने सुन्नं वियाणेह       | 119911 |
|                         |                             |        |

9

www.jainelibrary.org

[सुन्नहरे सुन्नयरं जिए जियं च तिहुयणं सयलं। कत्थ य ठाणट्ठिओ दूओ ॥] "ै पिच्छायाले जाणह पुँच्छइ जीवेसु संठिओ कज्जं। अप्पा पवेसयाले सुन्ने सुन्नं गओं जीवो सहलं तस्स निरुत्तं 112211 [धम्मत्थकाममोक्खं कहियं गाहेहिं चउविह(हं) नाणं। ज्झाणं तिविहपयारं निद्दिदं जोडविंदेण ॥ परमत्थेण य भणियं नाणं कामरू( रु)यपीढि जोइणिहिं । सव्वं चिय लोइ दिढं सव्वं चिय जोइसारो य॥ इत्थं उवएसनिरुत्तं जोडणि जोडंदकहियसंसाओ । सव्वं नाणपहाणं गाहापंचासियासव्वं ॥ जो पढइ जो य निसुणइ जोइणिनाणं च तिहुयणे सयले । सो पावइ निव्वाणं लहइ जसं तिहयणे सयले ॥] ज्झाणं नाणं तिलोयसारयरं । इय कामरूपसंठिय 205 भावियजणस्स दिज्जइ मा दिज्जड भावहीणम्मि 112811 👻 इति कामरूपपंचासिका समाप्त: ॥) शुभं भवतु कल्याणमस्तु ॥

10

#### टिप्पणी :-

१. ०आबंभ०। २. नासग्गे। ३. ०चिंताओ। ४. ० आबंभ०। ५. मीसिय०। ε. गुरुवएसेण। ७. ० रूय०। ८. परं। ९. ०सिया नामा। १०. दुयस्स लक्खणं प०। ११. सवणं। १२. ०बलं०। १३. सयल०। १४. इत्ताहे। १५. विविह०। १६. कहमि फुडं तं नि०। १७. बहुविहकालेण। १८. सिद्धि०। १९. निद्दहइ कम्म सयलं। २०. ज्झाणे पुण तक्खणे सिद्धी । २१. ०हरणे । २२. होइ । २३. कुंडलिवलिया मु० । २४. सयमब्भा०। २५. सत्थ०। २६. ओ रवि०। २७. ०भासाओ। २८. अणुदियहं। २९. सो चिय। ३०. ०भासं। ३१. ०सरवंनं। ३२. ०रूढं। ३३. ईसरखंडेंदुनाइ-सोहिल्लं । ३४. मारइ। ३५. ०ट्टिया। ३६. वरसंती। ३७. ०संघाओ। ३८. हंसो। ३९. ॰भावेणं। ४०. च। ४१. अकमयंकछित्ते। ४२. हवइ। ४३. राए। 88. एको। ४५. हवइ। ४६. वियाणेह। ४७. सुणि०। ४८. ०च्छित्ते समवण्णा। ४९. ॰क्खरा य जयवंता। ५०. सयलं। ५१. भणिय०। ५२. जीवम्मि। ५३. अत्थि धुवं तं वियाणेह । ५४. हवइ जइ पन्हा । ५५. २७-२८ गाथयोः व्युत्क्रमः पा० प्रतौ । ५६. जीव०। ५७. हवइ जइ। ५८. तो। ५९. सो। ६०. विणिग्गए जीए। ६१. काले । ६२. पट्ठि० । ६३. ''पुव्वाभिमुहेण ससहरो जाण'' । ६४. ०छित्तंमि गए । ६५. ०णेह । ६६. २९-३० गाथयोर्व्युत्क्रमः पा. प्रतौ । ६७. ०वाणिज्जं । **ξ**ζ. ०णेह। ६९. ३१ गाथानन्तरमेका गाथाऽधिका पा. प्रतौ, साऽत्र [] चिह्नान्तर्गता। ७०. गब्भपउए पिच्छइ। ७१. ससिरवि संठाण संठिया। ७२. सूरेण होइ पुरिसो। 69. एत्थ। ७४. सुन्नपिच्छाए। ७५. संगह०। ७६. होइ ससी वा०। ७७. ०हरो। ७८. सरह। ७९. कहमि। ८०. निव्वाणं। ८१. जं दिट्ठं। ८२. मेक्रं।८३. एकं। **૮**૪. सास॰ । ८५. कालस्स परिमाणं । ८६. 'तहव' नास्ति पा. । ८७. 'राये णव मासं पक्खेकं०। ८८. दोनि। ८९. एकरायमाणेण। ९०. छव्वरिसं। ९१. ०णेह। ९२. 'देहे' न पा.। ९३. विमलसिध्धी। ९४. ०कणय०। ९५. नहयलमज्झम्मि पिक्खए। ९६. ०सया तारिसं जाण। ९७. पिक्खइ। ९८. सुद्धब्भफलिह०। ९९. जंघविहीणेण। १००. य। १०१. पेक्खइ। १०२. फलिह०। १०३. पावइ। १०४. हरो विरिंची। १०५. भुवणयले । १०६. जाणिज्जइ तह० । १०७. अप्पा । १०८. पक्खेण होइ म० । १०९. बंधणं। ११०. अमुणिय०। १११. ०चिंताओ। ११२. ०मयंको। ११३. अमियधारसंघाओ । ११४. ज्झायइ । ११५. चिय । ११६. अदमेह गंठनाही । ११७. इ । ११८. कोयंडे। ११९. ज्झाइज्जइ। १२०. ०मंडली०। १२१. ५० तमगाथा न पा.। १२२. ०तेयं। १२३. भासंतं बंभगंठिमूलेसु। १२४. धुयं। १२५. तिकूणं। १२६. व।

१२७. अमरबहुसिद्धजक्खसंघायं । १२८. पउमरायसंफासं । १२९. परिट्ववह हिययचक्रमज्झम्मि । १३०. ०भासो । १३१. परिहरिउं सयल० । १३२. जल० । १३३. ॰तुहिणा। १३४. 'वरिसंती चंदमंडले सयलं'। १३५. चिन्तिय कंठयले यं। १३६. ज्झलहलिय०। १३७. पहो। १३८. कोयंड मज्झिमो। १३९. तह०। १४०. भाविदो। १४१. ०गणेसु। १४२. ०मत्तो। १४३. च। १४४. पुणं नवा। 👘 १४५. ६१-६२-६३ गाथा: पा. न। १४६. ०चंकमणं। १४७. धुवे। १४८. नवभेयभाव०। १४९. विविह०। १५०. व। १५१. कुणइ.। १५२. तेलोय०। १५३. ०यरं। 248. ठाएसु वियं। १५५. एच(व)लयं भाव भाविदो०। १५६. ०ट्टिया। १५७. ०ठिया। १५८. लपिंडो। १५९. ठाएसु भासीओ। १६०. छट्टमसरेण य। १६१. ०नाइ०। १६२. भुयमज्झे। १६३. पुच्छए। १६४. ०फुक्कियाए। १६५. ०संजुत्तं। १६६. [] एतदन्तर्गतं पा. प्रतावेव । १६७. तह य वि० । १६८. ०वाउ० । १६९. ०मज्झत्थं । १७०. ०सयलं । १७१. वामेण। १७२. वरुणं। १७३. तेओ। १७४. ० गओ तह हवइ वाऊ। १७५. हवइ। १७६. सूर-म०। १७७. पुहइ-जलेण य०। १७८. जं जं सयलं च चिन्तेइ। १७९. ०मारुयस्स चिंताए । १८०. धाऊ । १८१. लाहो । १८२. [] एतदन्तर्गतपाठ: पा. प्रतावेव । १८३. रुद्दो । १८४. '८२'तमगाथा '८४'तमगाथात: पश्चात् पा. प्रतौ । सा चेत्थं

#### ''सूरगमिए वाला घडियचउक्कंमि समुहा जयइ।

#### तह उद्धेण य वामा पुट्टिगया जिणइ रयणीए ॥८०॥"

१८५. प्यवाहे। १८६. 'बाला कामंगसत्तिसाहीणा'। १८७. धुवं। १८८. [] एतद्गतं पा. । १८९. ०संघाओ. । १९०. अमय० । १९१. पुरसंमि । १९२. हवइ। १९३. ०द्विएसु समरं। १९४. धुवं। १९५. खिवह। १९६. 'जीवं जिष्णइ सउन्नो'। १९७. चलिओ (?) । १९८. द्वाणेसु । १९९. [] एतदन्तर्गतं गाथाद्वयमधिकं पा. प्रतौ । २००. विजइ। २०१. छित्तम्मि कुणइ पिच्छाओ । २०२. ०हरो । २०३. [] एतदन्तर्गता गाथाऽधिका पा. प्रतौ । २०४. पिच्छइ । २०५. जीएसु । २०६. गए जीए । २०७. [] एतदन्तर्गतं गाथाचतुष्कं अधिकं पा प्रतौ । २०८. नेयं गाथा पा. प्रतौ । २०९. कामरूय-पंचासिया सम्मत्ता ॥

### श्रीपृथ्वीचन्द्रसूरिकृत यतिशिक्षापञ्चाशिका ॥ - विजयशीलचन्द्रसूरि

जैन मुनिओना आचारपालननी प्रक्रिया ए एक, अन्यत्र क्यांय, कोई पण धर्म-संप्रदायमां जोवा न मळे तेवी विरल अने असामान्य बाबत छे. आत्माना उत्कर्षने ज मात्र केन्द्रमां राखीने योजायेली आ प्रक्रियामां, मानवसहज दुर्बलताने कारणे, कोई आत्मा, ढीलो के शिथिल पडी जाय, तो तेने ढंढोळवा माटे अने पुन: ते प्रक्रियामां स्थिर करवा माटे श्रीपृथ्वीचन्द्रसूरिजी महाराजे आ लघु कृतिनुं निर्माण कर्युं छे. फक्त पचास गाथा-प्रमाण आ कृतिमां साधुने अने तेनी चारित्रभावनाने जागृत करवा माटे जे हृदयस्पर्शी टकोरो कर्ताए करी छे, ते अत्यंत प्रेरणादायक अने जागृतिप्रेरक छे. कर्ता श्रीपृथ्वीचन्द्रसूरि कया समयमां तथा कया गच्छमां थया, ते जाणी शकातुं नथी.

साधुजनोने शिक्षा आपतां आपतां तेमणे क्यांक क्यांक कहेवतोनो पण समुचित उपयोग कर्यो छे. दा.त. गाथा १२ मां ''पिक्खसि नगे बलंतं, न पिक्खसे पायहिट्ठओ मूढ !'' वांचतां ज,

> ''डुंगर जळती ला'य, देखे ते सारी जगत पगतळ जळती ला'य, रति न सूझे राजिया !''

आ लोकोक्तिनी याद आवी जाय छे. तो गाथा ४९मां ''नहि सुत्तनर-मुहे तरु-सिहराओ सयं फलं पडड़'' ए पंक्ति,

> ''उद्यमेन हि सिध्यन्ति, कार्याणि न मनोरथै: । नहि सुप्तस्य सिंहस्य, प्रविशन्ति मुखे मृगा: ॥''

ए सुभाषितनी स्मृति करावी आपे छे.

कलिकाल ए पडतो काळ होई आवुं ज चाले ; क्षम्य गणाय ; आम विचारनारा के बचाव करनारानी तो तेमणे भारे झाटकणी काढी छे (गा. ३१).

आ नानकडी कृति प्राकृत भाषाना अभ्यासीओ माटे जेम उपयोगी थशे, तेम साधुजनो माटे पण उपकारक बनशे ज, तेवी श्रद्धा छे.

# यतिशिक्षापञ्चाशिका ॥

| जयइ जिणसासणमिणं अप्पडिहयथिरपयावदिप्पंतं ।           |                |
|---|----------------|
| दूसमकाले वि सया सहावसिद्धं तिहुअणे वि               | १              |
| पढमं नमंसिअव्वो जिणागमो जस्स इह पभावाओ ।            |                |
| सुहुमाण बायराणं भावाणं नज्जइ सरूवं                  |                |
| जह जीवो भमइ भवं किलिट्ठगुरुकम्मबंधणेहितो ।          |                |
| तन्निज्जरवि[य]जहा, जाइ सिवं संवरगुणड्ढो             | 11 <b>3</b> 11 |
| इच्चाइ जओ नज्जइ सवित्थरं तं सरेह सिद्धंतं           |                |
| सविवेसं सरह गुरं(रुं) जस्स पसाया भवे सो वि          | 11811          |
| गुरुसेवा चेव फुडं आयारंगस्स पढमसुत्तम्मि ।          |                |
| इअ नाउं निअगुरुसेवणम्मि कह सीअसि सकन्न ! ?          | 4              |
| ता सोम ! इमं जाणिअ गुरुणो आराहणं अइगरिद्वं ।        |                |
| इह-परलोअसिरीणं कारणमिणमो विआण तुमं                  | ॥६॥            |
| रुट्ठस्स तिहुअ[ण]स्स वि दुग्गइगमणं न होइ ते जीव ! । |                |
| तुट्ठे वि तिहु[अ]णे लहसि नेव कइयावि सुगइपहं         | ୲୲୰୲୲          |
| जइ ते रुट्ठो अप्पा तो तं दुग्गइपहं धुवं नेइ।        |                |
| अह तुट्ठो सो कहमवि परमपयं पि हु सुहं नेइ            | 2              |
| जइ तुह गुणरागाउ(ओ) संथुणइ नमंसई इहं लोओ ।           |                |
| न य तुज्झणुरागाओ कह तम्मि तुमं वहसि रागं ?          | 9              |
| जइ वि न कीरइ रोसो कह रागो तत्थ कीरए जीव ! ? ।       |                |
| जो लेइ त(तु)ह गुणे पर-गुणिकबद्धायरो धिट्ठो          | १०             |
| जो गिन्हइ तुह दोसे दुहजणए दोसगहणतल्लिच्छो ।         |                |
| जइ कुणसि नेव रागं कह रोसो जुज्जए तत्थ ?             | ।।११।।         |

www.jainelibrary.org

| पिक्खिसि नगे बलंतं न पिक्खसे पायहिट्ठओ मूढ ! ।<br>जं सिक्खवसि परे, नेव कहवि कइआ वि अप्पाणं !    | ાશ્રા  |  |
|---|--------|--|
| का नरगणणा तेसि विअक्खणा जे उ अन्नसिक्खाए।<br>जे निअसिक्खादक्खा नरगणणा तेसि पुरिसाणं             | 11831I |  |
| जइ परगुणगरणेण वि गुणवंतो होसि इत्तिएणावि।<br>ता किं न करेसि तुमं परगुणगहणं पि रे पाव!?          | ાશ્વા  |  |
| जिणवयणअंजणेणं मच्छरतिमिराइं किं न अवणेसि ?।<br>अज्ज वि जम्मि वि तम्मि वि मच्छरतिमिरंधलो भमिसि ! | ાાર્યા |  |
| जेहिं दोसेहिं अन्ने दूससि गुणगव्विओ तुमं मूढ ! ।<br>ते विहु दोसट्ठाणे किं न चयसि पाव ! धिट्ठोसि | ।।१६।। |  |
| उवसमसुहारसेणं सुसीयलो किं न चिट्ठसि सया वि ।<br>किं जीव ! कसायग्गी-पलित्तदेहो सुहं लहसि ?       | ાારબા  |  |
| झाणे झीणकसाए आरद्धे किं न जीव ! सिज्जिज्जा ।<br>आकेवलनाणं ; ता झाणं कुणसु सन्नाणं               | 112211 |  |
| जह जह कसायविगमो तह तह सज्झाणपगरिसं जाण।<br>जह जह झाणविसोही तह तह कम्मक्खओ होही                  | 112311 |  |
| सज्झण्णपसायाओ सारीरं माणसं सुहं विउलं ।<br>अणुभविअ कहं छड्डिसि जं सुहगिद्धो सि[रे !] जीव !      | २०     |  |
| कि केवलो न चिट्ठसि विहुणिअ चिरकालबंध(?बद्ध?)संबंधं।   |        |  |
| कम्मपरमाणुरेणुं सज्झाणपचंडपवणेण ?   | ।।२१॥  |  |
| बुज्झसु रे जीव ! तुमं मा मुज्झसु जिणमयं पि नाऊणं ।  |        |  |
| जम्हा पुणरवि एसा सामग्गी दुझ्हा जीव !   | ાારસા  |  |

•

| जइ कहमवि जीव ! तुमं जिणधम्मं हारिऊण परिवडिओ ।<br>पच्छाणंतेणावि हु कालेणं जीव ! जिणधम्मं        | ॥२३॥      |
|--|-----------|
| ु<br>पाविहिसि वा नवा तं को जाणइ ? जेण सो अइदुलंभो ।<br>इअ नाउं सिवपयसाहणेण रे ! होसु कयकिच्चो  | แรงแ      |
| जइ अज्जवि जीव ! तुमं न होसि निअकज्ज साहगो मूढ !<br>किं जिणधम्माओ वि हु अब्भहिआ का वि सामग्गी ? | ા<br>ારષા |
| जा लद्धा इह बोही तं हारिसि हा ! पमायमयमत्तो ।<br>पाविहिसि पाव ! पुरओ पुणो वि तं केण मुल्लेण ?  | ॥२६॥      |
| अन्नं च किं पडिक्खसि ? का ऊणा तुज्झ इत्थ सामग्गी ?।<br>जं इहभवओ पुरओ भाविभवेसुं समुज्जमसि      | ા<br>ારખા |
| इह पत्तो वि सुधम्मो तं कूडालंबणेण हारिहा(हि)सि ।<br>भाविभवेसुं धम्मे संदेहो तं समीहेसि         | 117211    |
| ता धिद्धी मइनाणे ता वज्जं पडउ पोरिसे तुज्झ।<br>डज्झउ विवेगसारो गुणभंडारो महाभारो               | ।।२९॥     |
| जं निअकज्जे वि तुमं गयलीलं कुणसि अलवसारोसि ।<br>अन्नन्नकज्जसज्जो सि पाव ! सुकुमारदेहो सि       | ॥३०॥      |
| अन्नं च सुणसु रे जिअ ! कलिकालालंबणं न घित्तव्वं ।<br>जं कलिकाला नट्ठं कट्ठं न हु चेव जिणधम्मो  | ॥३१॥      |
| समसत्तुमित्तचित्तो निच्चं अवगणिअमाणअवमाणो ।<br>मज्झत्थभावजुत्तो सिद्धंतपवित्तचित्तंतो          | ॥३२॥      |
| सज्झायझाणनिरओ निच्चं सुसमाहिसंठिओ जीव ! ।<br>जइ चिट्ठसि ता इहयं पि निव्वुई किं च परलोए         | ॥३३॥      |

| इअ सुहिओ वि हु तं कुण जीव ! सुहकारणं वरचरित्तं ।<br>मा कलिकालालंबण-विमोहिओ चयसु सच्चरणं                | ાકઠા    |
|--|---------|
| केवलकट्ठेण धुवं न सिज्झए वरचरित्तपब्भट्ठो ।<br>कट्ठरहिउ(ओ)वि सुज्झाणसु(स)हिओ वि जाइ सिवं               | ારૂતા   |
| अज्ज वि जिणधम्माओ भवम्मि बीयम्मि सिज्जई जीवो ।<br>अविराहिअसामन्नो जहन्नओ अट्टमभवम्मि                   | ।।३६।।  |
| ता जीव ! कट्ठसज्झं जइधम्मं तरसि नेव मा कुणसु ।<br>कि न कुणसि सुहसज्झं उवसमरससीलणं चरणं                 | ୲୲ଽଡ଼୲୲ |
| नहि कट्ठाओ सिद्धा विसिट्ठकाले वि किंतु सच्चरणा।<br>ता तं करेसु सम्मं कमेण पाविहिसि सिवसम्मं            | 113611  |
| जं पुव्वं पि [हु]जीवा कमेण पत्ता सिवं चरित्ताओ ।<br>आइजिणेसरपमुहा ता तम्मि कमेण सिज्झिहिसि             | ॥३९॥    |
| जो महरिसिअणुचिन्नो संपइ सो दुक्करो जइ पह(पहो) ता ।<br>अणुमोअसु गुणनिवहं तेसि चिअ भत्तिगयचित्तो         | 118011  |
| वसइ गिरिनिगुंजे भीसणे वा मसाणे<br>वणविडवितले वा सुन्नगारे चरन्ते ।                                     |         |
| हरि-करिपभिईणं भेरवाणं अभीओ<br>सुरगिरिथिरचित्तो झाणसंताणलीणो  | ।।४१॥   |
| जत्थेव सूरो समुवेइ अत्थं तत्थेव झाणं धरई पसत्थं।<br>वोसट्ठकाओ भय-संगमुक्को, रउद्द खुद्देहिं अखोहणिज्जो | ાકડા    |
| एसइ उज्झियधम्मं अंतं पंतं च सीअलं लुक्खं।<br>अक्कोसिओ हओ वा अद्दीणविदाणमुहकमलो                         | ॥४३॥    |

| धन्ना ते सप्पुरिसा जे नवरिमु(म)णुत्तरं गया मुक्खं ।<br>जम्हा ते जीवाणं न कारणं कम्मबंधस्स | ૪५           |
|---|--------------|
| अम्हे न तहा धन्ना धन्ना पुण इत्तिएण जं तेसि ।<br>बहु मन्नामो चरिअं सुहावहं धीरपुरिसाणं    | <u>॥</u> ४६॥ |
| धन्ना हु बालमुणिणो कुमारभावम्मि जे उ पव्वइआ ।<br>निज्जिणिऊण अणंगं दुहावहं सयललोआणं        | ં ાાઠભા      |
| एवं जिणागमाओ सम्मं संबोहिओ सि रे जीव ! ।<br>संबुज्झसु मा मुज्झसु उज्जमसु समीहियत्थम्मि    | 11861        |
| जं उज्जमेण सिज्झइ कज्जं न मणोरहेहिं कइआवि ।<br>नहि सुत्तनरमुहे तरु-सिहराओ सयं फलं पडइ     | ୲୲୪୧୲୲       |
| ता परिभाविअ एअं सव्वबलेणं च उज्जमं काउं ।<br>सामन्ने होसु थिरो जह <b>पुहईचंद</b> गुणविंदे | االرهاا      |
| इति यतिशिक्षापंचासिका संपूर्णा ॥  |              |

18

इअ सोसंतो देहं कम्मसमूहं च धिइबलसहाओ। । जो मुणिवसभो एसो तस्स अहं निच्चदासु म्हि

118811

### अज्ञातकर्तृक चतुविंशतिजिननमस्कार – काव्यो - विजयशीलचन्द्रसूरि

मध्यकालना जैन मुनिओए काव्योना अने छंदोना केटकेटला प्रकारो पर सर्जन कर्युं छे ! जेम जेम हस्तप्रतिओ उकेलाती जाय छे, तेम तेम आ सर्जनो प्रकाशमां आवतां जाय छे. अहीं एक नानी परंतु जुदी ज भातनी संस्कृत रचना प्रस्तुत छे : चतुर्विंशतिजिननमस्कार.

''चोवीश तीर्थंकर'' ए जैन परिभाषानो शब्दगुच्छ छे. जैन धर्म अनुसार, ऋषभदेवथी महावीर-वर्धमान स्वामी सुधीना चोवीश धर्मप्रवर्तक तीर्थंकरो थया छे; तेमनी स्तुतिनां आ काव्यो छे. २४ तीर्थंकरोनी स्तुति करतां संस्कृत काव्यो, स्तोत्रो तो असंख्य उपलब्ध छे: प्रकाशित तेम ज अप्रकाशित. पण अहीं प्रकाशित थतुं स्तोत्र तेना छंदने कारणे ध्यानपात्र बने तेवुं छे.

प्राकृत भाषाओमां ज मुख्यत्वे प्रयोजाता 'वस्तु' छंदमां (मात्रामेळ) संस्कृत पद्य भाग्ये ज रचाएलां जोवा मळे छे. जे मळे ते पण एकलदोकल ; एक सामय जथ्थामां नहीं ज. मारी जाण मुजब (भूलचुक लेवीदेवी) आ छंदमां, एकी साथे, २४ पद्यो, एक सळंग रचनारूपे मळ्यां ते विख्ल गणाय तेम छे.

आ स्तोत्रना कर्ता अने तेनो रचना-समय प्राप्त नथी थता, परंतु छंदनी प्रयोगरीति उपरथी ते १७मा शतकनी अने कोई विद्वान् जैन मुनिनी रचना होवानुं अनुमान थाय छे.

आ स्तोत्रनी मुख्य विशेषता, तेमां प्रयोजवामां आवेलो यमक अलंकार छे. शृंखलायमक चोवीशेय पद्योमां अखंड जोई शकाय. प्रथम पद्यनो छेल्लो शब्द ते ज पछीना पद्यनो प्रथम शब्द होय ते शृंखलायमक. अने वधुमां दरेक पद्यनी २-३-४-५ पंक्तिओमां पण आ ज शृंखलायमक जळवायो छे: दरेक पंक्तिनो अंतिम शब्दांश ते पछीनी पंक्तिनो प्रथम अंश बने छे. आ अतिकठिन लागती योजना पण कवि एकदम अनायास-सहजतापूर्वक अने काव्यनी मधुरता तथा प्रासादिकतानी मावजत करवा साथे करी शक्या छे, ते अद्भुत लागे छे. आ रचना धरावतां फुटकळ पत्रोनी बे जुदी जुदी नकलो मने मुनिश्री धुरंधरविजयजी तरफथी प्राप्त थई हती. बन्नेनी लखावट जोतां १७मा शतकनी होवानुं अनुमान थयेलुं. बन्ने पत्रोने साथे राखीने आ वाचना यथामति तैयार करी छे, अने जुदा पडता पाठोने नीचे टिप्पणी तरीके मूक्या छे.

# चतुर्विंशतिजिननमस्काराः ॥

| <b>प्रथमजिनवर</b> प्रथमजिनवर ! निखिलनरनाथ-         |       |
|--|-------|
| संसेवितपदकमल ! कमलबन्धुबन्धुर ! महोदय ! ।          |       |
| दययोद्धृतभीमभवरूपकूपगतलोकसमुदय ! ॥                 |       |
| दयमानश्रियमसुमता-ममलचरित्रपवित्र !                 |       |
| वित्रस्ताखिलदुरितजय ! जय निष्कारणमित्र !           | 11211 |
| मित्रभासुर मित्रभासुर ! जय <b>श्रीअजित</b> !       |       |
| विजया–जितशत्रुभव ! भुवनसूर ! दूरिततमोभर ! ।        |       |
| भरताधिपनृपतिवरसगरपूज्य ! भवरजनिवासर ! ॥            |       |
| सरभसभासितभुवनतल-केवलविमलालोक !                     |       |
| लोकशिवंकरसकलदिग्-वलयविलासिश्लोक !                  | 11211 |
| श्लोकगद्य श्लोकगद्यप्रभृति-निखद्य-                 |       |
| पदपद्धतिगेयगुण ! विगतवल्गदुपसर्गसङ्गम ! ।          |       |
| गुमदुर्गम ! विनयनयनिलय ! समयसरिदोघगिरिसम ! ॥       |       |
| समसंयमसमतादिगुण-गणम्णिरोहण ! परम                   |       |
| रमणीयागम ! जय सदा <b>श्रीसम्भवजिन</b> ! वितम !     | 3     |
| तमभिनन्दन तमभिनन्दन-देवमन्दरा-                     |       |
| मन्दारमालामिलितमौलिमौलिसुरराजसेवित ! ।             |       |
| विततोञ्ज्वलकीर्तिभरभरितभुवन ! मुनिभि: प्रशंसित ! ॥ |       |
| सितकरसुन्दरतरलतरचालितचामरराजि-                     |       |
| राजित ! रंजय येन जिन ! तव पदकमलमभाजि               | 11811 |

| भाजितोत्तम भाजितोत्तम कनक <b>सुमतीश</b> !              |       |
|--|-------|
| पाथोदपथपांथपथिपव्य(च्य)मानपरमद्भिवैभव ! ।              |       |
| भवमार्गगतदीनभव्यजनतासुधाप्लव ! ॥                       |       |
| प्लवगचलाचलकरणजय ! योगीश्वर ! मुनिनाथ !                 |       |
| नाथवन्तमचिरेण मां कुरु कुरु रमासनाथ !                  | ાવા   |
| नाथनिर्मल नाथनिर्मल-पद्मसमचरण !                        |       |
| पद्मानन ! पद्मदलविपुलनयन ! वरपद्मलाञ्छित ! ।           |       |
| छितपद्माभोगरस ! पद्मरागपत्रखमहोर्जित ! ॥               |       |
| जित-पद्मासुत ! सुतनुरुचि-निचयनिराकृतपद्म ! ।           |       |
| पद्मप्रभजिन ! समधिगत-शिवसम्पद्मयसद्म !                 | ।।६॥  |
| सन्मनोरथ सन्मनोरथ-करणसुररत्न !                         |       |
| रत्नोज्ज्वलफणमुकुट ! मुकुटरोचिरंजितदिगंतर ! ।          |       |
| तरसाजितजगदजितमोहमल्लहेलाहतस्मर ! ॥                     |       |
| स्मरणपरायणजनजनित-वांछिततत(ति) ! नरदेव !                |       |
| देव ! <b>सुपार्श्व</b> सुपार्श्व ! जय भुवनत्रयकृतसेव ! | 11911 |
| सेवकोत्तम सेवकोत्तम-फलद ! निस्तन्द्र-                  |       |
| वरचन्द्रोज्ज्वलवर्ण ! वरचन्द्रसान्द्रनिःश्वाससौरभ ! ।  |       |
| रभसाऽऽगतसकलशुभऋदिसिद्धिकुलभुवनसंनिभ ! ॥                |       |
| निभवंध्य ! प्रतिसन्ध्यमपि जगदञ्चित जिनचन्द्र !         |       |
| र्रें चन्द्रप्रभ ! जय ! सातिशय-गुणगणरत्नसमुद्र !       | 11211 |
| मुद्रसानत मुद्रसानत-निखिलनाकीन्द्र !                   |       |
| सुविधीश्वर ! सुविधिपथपान्थधौतकल्मषरजोमल ! ।            |       |
| मलयोद्भवसुरभितमविमलशीलजनजनितपरिमल ! ॥                  |       |
| मलविमुक्तमुकाविशद-तनुकान्तिभिरभिराम !                  |       |
| रामा-सुग्रीवप्रभव ! जय कमलाकुलधाम !                    | 11911 |

| धामधीरिम धामधीरिम रम्यभूपाल-                             |        |
|--|--------|
| विपुलोज्ज्वलकुलकुमुदकौमुदीश ! जगदीश ! शीतल ! ।           |        |
| तलपादस्पर्शवशसुपरिपूतभूतल ! महाबल ! ॥                    |        |
| बलर्शांसनशंसितविशद-गुणसंततिसंवीत !                       |        |
| वीतकषाय ! शमायतन ! तव विनमामि प्रीत !                    | ॥१०॥   |
| प्रीतये भव प्रीतये भव भुवनविख्यात-                       |        |
| महिमाऽहिम-हिमकिरण-हंसयान-हरि-हर-पुरन्दर-                 |        |
| दरदायकविषमसुमसायकस्य देव ! क्ष्यंकर ! ॥                  |        |
| करतललुलितसरोजवर ! जगतीजनितेश्रेय ! ।                     |        |
| <b>श्रेयःस्वामिन( न् )</b> ! भवदमन ! तनुरुचिजितगाङ्गेय ! | 11११11 |
| गेयसद्गुण गेयसद्गुण ! मघवमणिमुकुट-                       |        |
| कोटीतटघृष्टपद्नखऋमभूषितवसुन्धर ! ।                       |        |
| धरणीधव-धंवै धीर जिन <b>वासुपूज्य</b> वसुपूज्यसुतवर ! ॥   |        |
| वरदीभूतपवित्रवेंपुँ-रपहस्तितसिन्दूर !                    |        |
| दूरनिवारितदुरित ! जय तीर्णभवाम्बुधिपूर !                 | १।१२॥  |
| पूरयाश्रित पूरयाश्रित-जनमनोभीष्ट-                        |        |
| मसमोदय ! चलनतललुलितसकलभुवनैकवैभव ! ।                     |        |
| भवभूधरभिदुरवर ! विमल ! भीमभावारिभैरव ! ॥                 |        |
| रवगम्भीरिममधुरिमा-ऽध:कृतजलदनिनाद ! ।                     |        |
| नादरतस्तव नमति क: स्फुटवाणीसंवाद !                       | ।।१३॥  |
| वादनिर्जित वादनिर्जित देवनरवादि-                         |        |
| सम्पादितभक्तिभरविदितवस्तुविस्तार ज(जि)नवर ! ।            |        |
| वरलावरवरगमन ! जनहितार्थकरणैकतत्पर ! ॥                    |        |
| परमपदप्रदपदकमल ! विस्तृतकीर्तिपराग ! ।                   |        |
| रागरोषजिदनन्त ! जय भुवि विश्रुतपरभाग !                   | ાારકા  |
|  |        |

0-----

www.jainelibrary.org

भागधेय[युत] भागधेय[युत] ! प्रचुरसौभाग्य-सम्भावितपदकमल ! वचनवीचिनीचै:कृतापर-परमाहितकुमतमत ! धर्मनाथ ! निर्वृतिवधूवर ! ॥ वरणीभूतभुजावलय-लीनजगत्त्रयकान्ति-कान्तिधाम ! सुखमतनु मे वितनु विमुद्रितशान्ति 118411 शान्तिजिन ! जय शान्तिजिन ! जय दोषभयभीत-भुवनत्रयदुर्गसमसमवसरणवरवप्रभासित ! सितचामर-भेरिरव-भाः समिद्ध-सिंहासनासित-सितकर-धवलच्छत्र-वरनि:स्वन-विलसदशोक-शोकहारिपुष्पप्रकरनन्दितविष्टपलोक ! 11१६।। लोकलोचन लोकलोचनचतुर ! चतुरन्त-वसुधाधव ! धवलतमपरमकीत्तिसंभारसंगत ! गतकल्मष ! विषमतमदावदाहजलवाह ! शाश्वत ! 11 स्वतनुसमुञ्ज्वलकान्तिभर-भच्छि(र्तिस)तसुरगिरिराज ! । राजसहस्रनिषेव्य ! जय कुन्थुनाथजिनराज ! 112/011 राजराजित राजराजित ! हारनीहार-हेरहासभासुर ! परमपदेविलास ! भुवनैकबान्धव ! धवलोञ्ज्वलकीर्तिभर ! भरतभूमिभूषण ! गताश्रव ! 11 **श्रवन्मुद**श्रुनतश्रमण-सिक्तर्रेम ! संकल्प-कल्पद्रुम ! देवाऽर ! जय जन चिन्तामणिकल्प ! 112211 कल्पनातिग कल्पनातिग ! कल्पितानल्पसंपद्-जय मल्लिजिन ! मोहमल्ल ! मानैकभञ्जन ! जनमिथ्याभावगदविलसदान्ध्यनाशनसुधाञ्जन ! - 11 जॅननजरामृतिवल्लिवन-मोटनघनपवमान ! । मानवभवपावन ! मुनिप ! बोधितजनसन्तान ! 112911

| तानवानत तानवानत-कर्मसम्बन्ध !                                       |       |
|---|-------|
| तानवानत तानवानत-कमसम्बन्य !<br>वरकेवलमहिमभररभसनृत्यदमरेन्द्ररमणी- । |       |
| रमणीयकहारगलदमलरत्नरोचिष्णुधरणी- ॥                                   |       |
| धरणीधर ! गुरुगरिमवर ! <b>सुव्रत</b> ! भव्यानसम                      |       |
| समवसृतिस्तव भगवता(त:) पायादपायादमम !                                | ાારગા |
| मम <b>नमीश्वर</b> ! मम नमीश्वर ! वितनुकुशलानि                       |       |
| कुशलावं लूनसमकर्मरूढ सुप्रौढकानन ! ।                                |       |
| जनतानामशिवकरमकरकेतुभयहेतुनाशन ! ॥                                   |       |
| सनरामरपशुपरमसम ! जनतोल्लसदुपदेश ! ।                                 |       |
| देशदूरसीमाशमितसडमरमरकक्लेश !  | ॥२१॥  |
| क्लेशकारण क्लेशकारणनिखिलयदुराज्य-                                   |       |
| <b>राजीमति</b> संपदाभोगभोगमाभोग्य जिनवर ! ।                         |       |
| नवरसवर्शेमनधिगत ! तं विहाय विधिधृततपोभर ! ॥                         |       |
| भरतावनिपावनसुगि <b>रिरेवत</b> मौलिनिविष्ट ! ।                       |       |
| विष्टपवन्दित ! <b>नेमिजिन</b> ! जय सौभाग्यविशिष्ट !                 | ારગા  |
| शिष्टनन्दित शिष्टनन्दित ! कमठहठमुक्त-                               |       |
| जलवारणभुजगपतिधरणविहितविकटस्फु(स्फ)यञ्चित-                           |       |
| चितरोचीरुचितरतरवपुरपास्तसतडिद्घनोर्जित ! ॥                          |       |
| जितमायामद ! <b>पार्श्वजिन</b> ! विघ्नगणानध्याय ! ।                  |       |
| ध्यायति य: तव नाम भुवि स भवति विगतापाय !                            | ॥२३॥  |
| पायनायक पायनायक कायकलकान्ति–  |       |
| संतर्जितकनक मम पंकमंकनिश्शंकहरिवर–                                  |       |
| वरणोन्मुखनिखिलसुखहेतुमुक्तिवनिताप्रियंकर ! ॥                        |       |
| करपल्लवजितवरकमल ! विहृतिविबोधितविश्व ! ।                            |       |
| विश्वजनीन ! जिनेन्द्रवर ! <b>वर्धमान</b> ! विजयस्व                  | ારજા  |

यः स्वभावज यः स्वभावज-भक्तिभावेन भवतो जिनराज ! नतिमभितनोति ननुकृतसमीहित ! । हितशासन ! सैंनरेन्द्रसुर्राकंनरेन्द्रखेचरेन्द्रसेवित ! ॥ वितमाः स भवति भवतिरस्कारविशारद ! धीर ! । धीरमणीयवच:प्रचय ! सकलजगत्त्रयवीर ! ॥२५॥

25

# इति चतुर्विंशतिजिननमस्काराः समाप्ताः ॥

#### पाठान्तर:-

१. सरससभा० ॥ २. शम० ॥ ३. शम्भव० ॥ ४. ० वन्दारु ॥ ५. पांथपति० ॥
६. भवमारवमार्गगत० ॥ ७. मा ॥ ८. रत्नोज्ज्वलमुकुटफण-विकटरोचिरोचितदिगन्तर ॥
९. ०कुलवचनसंनिभ ॥ १०. चन्द्रप्रभजिन साति० ॥ ११. ०शासिन० ॥ १२.
०जननिश्रेय० ॥ १३. ०धव धर धीर० ॥ १४. ०पवित्रतनु० ॥ १५. प्रवर० ॥ १६.१७.
०राजत ॥ १८. हरभासुर ॥ १९. ०पदपदविलास ॥ २०. ०क्लम ॥ २१.
जननो० ॥ २२. रसवससमधि० ॥ २९. नतकृत० ॥ ३०. सुनरसुर० ॥

# श्रीवासुपूज्यस्वामी - प्रतिष्ठाविधिसूचक स्तवन सं. साध्वी दीप्तिप्रज्ञाश्री

१९मा सैकाना प्रभावक तथा विद्वान् जैन आचार्य श्रीसौभाग्यलक्ष्मीसूरि महाराजना शिष्य मुनि प्रेमविजयजी महाराजे रचेल श्रीवासुपूज्यस्वामिप्रतिष्ठा-विधिसूचक स्तवन अत्रे रजू करतां आनंद थाय छे. संपादननी दिशामां अज्ञ तथा अणघड होवा छतां पूज्य आचार्यादि गुरुभगवंतोना मार्गदर्शनना टेके टेके आ एक प्रयास मारी अल्पमतिथी कर्यो छे. आमां क्षतिओ रही हशे ज तेनी मने खातरी छे. ते क्षम्य गणवानी तथा ते तरफ ध्यान दोरवानी विनंति करुं छुं.

सूरतमां गोपीपुरा विस्तारमां आजे पण आ स्तवनमां वर्णित श्रीवासुपूज्य-स्वामीनुं भव्य जिनालय मोजूद छे; ते त्यां लालमणिदादाना देरासर तरीके पण ओळखाय छे. ते देरासरना प्रणेता शाह रतनचंदना वंशपरंपरागत वारसदारो आजे पण विद्यमान छे. अने तेमणे आ देरासरनो जीर्णोद्धार करावी थोडांक वर्षो पूर्वे (सं.-२०३२ मां) तेनी पुन: प्रतिष्ठा पण करावी छे. ढाल १ मां (कडी-११) उझिखित माणिभद्रदेवनी प्रभावक प्रतिमा प्रण त्यां छे, जेने कारणे ज लालमणिदादा - एवुं नाम प्रसिद्ध थयुं जणाय छे.

स्तवनमां प्राप्त थती ऐक्रिंशसिक हकीकत ए छे के आ देरासर बनावनार आवक स्तनचंद, शट्टांजयतीर्थनो पंदरमो जीर्णोद्धार करावनार समराशा ओसवालनी वंशपरंपरामां आवे छे तेवुं आ स्तवनमां (ढाल १, कडी १) जणावायुं छे.

स्तवननो मुख्य विषय, वासुपूज्य देरासरनी प्रतिष्ठ-अंजनसालाकाना रतनचंद शेठे करेल दन्ना दिवसना महोत्सवनुं विश्वाद वर्णन छे. उत्सवमां कया दिवसे कई किया थई, तेनुं चित्र स्तवनकारे रूडी रौते आल्लेखी बताव्युं छे. एमां जैन आगमो तथा शास्त्रोमां वर्णित, तीर्थंकरना जीवननी घटनाओनुं पण वर्णन कर्युं छे, अने साथे साथे उत्सवमां ते ते घटनाओ परत्वे केवी केवी कियाओ करी हती तेनुं पण चित्र आप्युं छे. आमां देरासरनी प्रतिष्ठानी संवत / तिथि (ढाल-१०, कडी ६) पण मळी आवे छे, ते जोतां आ कृति धर्मपरक होवा छतां ऐतिहासिक पण गणाय तेवी छे.

प्रतिष्ठाकारक आचार्यमहाराजनुं जुदुं नाम क्यांय देखातुं नथी, तेथी संभव

øे के सौभाग्यलक्ष्मीसूरि महाराजे ज प्रतिष्ठा करावी होय. तेनो साचो ख्याल तो ते प्रतिमा परना लेख वांचीए त्यारे ज आवी शके.

१३ ढाल अने १२४ कडीमां पथरायेलुं आ स्तवन पूज्य आचार्य श्रीशीलचंद्रसूरिजी म. पासेथी मने मळेल ३ पानांनी अने सं. १८५२ मां लखायेली प्रति उपरथी तेओनी दोरवणी अनुसार ऊतार्युं छे. ते प्रतिनां पानां एक तरफथी षाणीमां के तेलमां खरडायेला होवाथी अमुक भाग उकेली शकायो नथी. ते ते स्थाने बग्या खाली राखी छे.

#### श्रीवासुपूज्य स्तवन ( प्रतिष्ठा सूचक ) ॥

अत्री जिनाय नम: ॥ श्रीवासुपूज्यजिणंदनें प्रणमुं गुण अभिग्रंम जेहनें नामे संपजे सफल मनोरथ धांम ॥१॥ त्रिभुवन वंदन पावनो वसुपूज्यनंदन देव वंदन भाव सहित करी तवन करुं ततखेव ॥२॥

(आदिजिणंद मया करो-ए देशी ॥)

पुन्य प्रभावक उपना ओसवाल वंश प्रसिधो रे समरासारंग सेत्तुंजातणो जिणें पनरमो उद्धार कीधो रे ॥१॥ धन धन श्री जिनसाशनें ॥

नवलख बंदिवाननें छोडावि यस लिधो रे तस् वंशें सुरतबिंदरे वसतां कारिज सिधो रे ॥२॥ ध०। खेमराज मेघराजना झवेरसा व्यवहारी रे तस सूत पुण्य पवित्र जयो रतनचंद सुखकारी रे ॥३॥ ४०। एकदा गुरुमुखें सांभलि वासपुज्य संबंध रे। रोहिणीचरीत्रनें धारीनें हर्ष थयो पुण्यबंध रे ॥४॥ ध०। वासूपूज्य महाराजनो निपजावुं प्राशाद रे मोंहमांग्या धन खरचिनें भूमिका शुद्धि आह्लाद रे ॥५॥ ध०। रंगमंडप रलियांमणो कोरणि मेढि उदार रे गभारो तेजें झलहले गर्भावास निवारे रे ॥६॥ ध०। धन खरच्युं मोटें मनें जिनमंदिर सुभ काज रे देवविमान समो देखी हरख्यां संघ समाज रे ।।৩।। ध०।

चंद्र परे उज्वल कांति पाषाण दल मंडाव्यां रे दुर देस थी आंणियां शिलावट मन भाव्यां रे ||८|| धo | पंचसत्तर सित्तेर भागनि पडिमा जिननी भरावि रे करण चरणनि सित्तरि पांमवा जेह जणावि रे ॥९॥ ध०। मांन प्रमांणें बिंब तें सवि जननें सुखदाइ रें संपुरण मुरति थई रतनसा हरख वधाइ रे ॥१०॥ ध०। कुमार यक्ष चंडा देवि वासुपुज्यपद-रागि रे यलें विघन मांणिभद्रजि दिइं सांति पृष्टि सोभागि रे ॥११॥ ध०। (॥ भरत नृप भावस्यूं ए – ए देशी ॥) हवे प्रतिष्ठा कारणें ए पुरव सन्मुख सार तो वेदिका सुभ रचि ए। दोढ हाथ उन्नत भलि ए पुरीत वस्तु उदार तो वे० ॥१॥ पंच स्वस्तिक श्रीफल ठवो ए पंचरतन भूपीठ तो वे०। अष्ट सगंधे विलेपीयो ए करीइं धूप उकिट्न तो ।।२॥ वे०।

29

थापे मन उछरंग तो ॥३॥ वे०। वंसपात्रमां जवारका ए चउ वंशे सात सात तो वे०। पुन्य अंकूर जांणें उगीया ए वितान तोरण पांति तो ॥४॥ वे०। समोसरणने प्रथम समें ए पीठ रचे सुरराज तो वे०। तिम इहां सुभ मुहरत-दिनें ए भूमी शुद्ध महाकाज तो ॥५॥ वे०। हवे जल लेवा कारणे ए थयो उजमाल पुन्यवंत तो । जलयात्रा भणि ए हयवर सिणगार्या घणा ए मयगल मदमलपंत तो ॥६॥ ज०। देवानंदा जिम विरनें ए वषभ रथ कर्या सझ तो ज०। पंचमा अंगमां वरणव्यां ए तिम इहां रथ घन गज्ज तो ॥७॥ ज०। भेरी भुंगल सरणाइओ ए होल निशांन वाजित्र तो ज०। संघ चतुर्विध बहु मल्या ए ध्वजा लहकंत पवित्र तो ॥८॥ ज०।

बार अंगुलमां ग्रंथी नहि ए उन्नत सरल उत्तम तो वे० । चउ विदिशि चउ वंसनें ए

सोहव गीत मंगल भणे ए नरनारिना थोक तो ज०। प्रसन्न करि जलदेवता ए मंत्र सनाथ सलोक तो ॥९॥ ज०। सोल सिणगारे सोभती ए रुविवंति चउ नारि तो ज०। सजल कलस शिर पर ठवि ए आवे जिन दरबार तो ।।१०।। ज०। प्रभुने जिमणि दिशिं ठवे ए देइ प्रदक्षणा मान तो ज०। संघ सत्कार आडंबरे ए रतनसा हरख प्रमांण तो ॥११॥ ज०। ढाल [३] ।। (देव नांहना छोकरां थावे वीरनें खंधोले चढावें - ए देशी ॥) हवे मंगलकलशनि रचना करिइ विधियोग नि यतना ---- अड चित्र मध्ये कुंकुमसाथीओ मंत्र 11211 पंच रतननें द्रव्य अभंग माहिं ठविइं मन उछरंग मोटो सनाथमहोच्छव कोजे तथा बिंबप्रवेस तिहां किजे 11211 नवा बिंब प्रतिष्ठां हौवे तिहां कुंभथापन धुरी जोवे प्रभु जिमणि दिसें मनोहार

31

दीपक जयणा सुखकार ॥३॥

www.jainelibrary.org

कुंभचक्रे नक्षत्र आवे संवि पाप ताप संमावे कंठे फुल माल नालेर सुभ वस्त्र आछादित सार 11811 शालि-स्वस्तिक उपर थापें संदरी गीत ग्यांन आलापे जिन साशनमां ए करणी निरविघन तणि ए नीसरणी 141 सवि अंकमां अक्षय अंक तेह मांनें गणवो निस्संक सोहव पुत्रवंति नारी नवपटनो मंत्र संभारी 11311 थिर सासें अखंड धारे जल पुरीजें सुभवारे लघुस्नात्र ते दिनथी सोहिइं शांति स्मरण त्रिसंझ जोइइं 11911 एह किरीयामां हुसीयारी त्रिकरण योगें व्रतधारी उज्वल तास वछि गवरी (?) घृतदीप पूरे शुभ कुंमरी 11211 सर्यकांतिनो देवता योगें धर्मदीपक प्रगटें उद्योगे इम कुंभथापन दीपयुगति सौभाग्यलक्ष्मिसूरी शक्ति ॥९॥ इति कुंभथापना-भास ।

www.jainelibrary.org

सुरिजन बीजे दीवसें सुजांण सोवन-पट्टे सोहतो सूरिजन सुगंधना सात लेप सोवन लेखनि दिपतो 11211 स॰ नंदावर्त लिखंत कल्यांण वेलनो कंद ए सु० जन जननि गढ त्रिण (?) राजित परमानंद ए ॥२॥ सू॰ खेत्रपाल आहवान त्रिजे दिवसें किजीए सु० नवग्रह दश दिगपाल आठ मंगल थापी पुंजीए ॥३॥ स॰ सिद्धचक्रनि सेव चोथें पांचमें दिहाडले सु० वीसथांनिकनि भक्ति धरता रतनचंद हियडले 11811 जगपति वासूपूज्यनो जीव पदमोत्तर भूप संयमी जगपति 'वीसथांनिक तप' कीध-भव त्रिजे गुण अभिरांमी 11411 ज॰ बांधी तिर्थंकर गोत्र प्रांणत स्वर्गे सुधामिया ज॰ विस सागरन्ं आय भोगवि जयाकुखे पांमीयां ॥६॥

33

वसुपूज्य भूपति गुंणनिलो ज॰ जयारांणि गुणखांण सर्व स्त्रीजातिमां सीरतीलो ॥७॥ ज॰ जेठ सुदि नवमी जांण गर्भावासें अवतर्या ज० पोढि पल्यंग मझार सुख निद्राइं अलंकर्या 11211 ज० चउद सुपन तिहां दीठ तस फल शास्त्रमां दाखीओ ज० चवनकल्यांणक धारि प्रांणथापन बिंबे भाखिओ 11911 ज० इंद्र आवी ततखेव वंदि जननिं कुशल पुछे ज॰ त्रिण ज्ञांन भगवान उगतो रवि सम रूप छें ॥१०॥ सु० छठे दिवसें ए काज किजे किरिया अतिभलि सु॰ रतनसा हरख अपार धन खरचिजें मन रलि ॥११॥ ॥ ढाल ॥ [५] ( आवो जमाई प्रांहूणा जयवंताजी ए देशी ॥) ऐरावण गजपति कहे सुणो मातजी करसें मुझ स्वामि सेव तव सुत जातजी मुझ परे क्षमाभार वहस्यें तुम नंदनजी इम कहीतो धोरी दीठ नयनानंद[न]जी 11811

ज॰ चंपानगर मझार

रागद्वेष-गजगंजनो कहे सींहोजी दीठो जया रांणि तेह धर्मसमीहोजी माहरो चपल दोष वारस्ये पुत्र सेवाजी सीरीदेवी विनवें एम तत्व कहेवाजी 11511 जांणिइं फुलमाला वदे देखे देविजी पंसरसें मुझ परे वास किरती तहेविजी चंद्र कहे मुझ ओपमा सुत मुखनेजी चंद्रमुखी मन धारी पुरण सुखनेजी 11311 मोहनीशाने चूरसें जायो नाथजी जणावतो सुरय दीठ सुत जगनाथजी - - - - सहस जोयणी जसु होसेजी इम जांणी ध्वज जलपंत जग दुख खोसेंजी 11811 थांनक ए गुण रयणनुं सहिजायोजी कहेवा आव्यो निधि कुंभ निसुणो मायोजी मुझ परे त्रिभुवन जीवनजी तुखा हरसेंजी जांणीइं सरोवर पद्म वांणि वरस्येजी 141 सायर कहे एह मुझ थर्की महागंभीरोजी कहेवा आव्यो छुं मात पुण्यमंदीरोजी वैमानिक नमस्यें सुरा मांन मोडीजी वदतो एम विमान निरखे माडीजी 11211 जगदाभरण शोभा वधस्यें विश्वानंदीजी उचरंती रयणभ[र]थाल जोवे आनंदेजी तव सुत कर्म इंधण दहस्यें ध्यान अगनेंजी इम कहे मानिइं मात चउदमें स्वप्नेजी 11011

For Private & Personal Use Only

35

हरखें मनह मझार प्रभु पद वंदेजी 101 ढाल [६]॥ (मधुकर माधवने कहीजे रे - ए देशी ॥) फागुण वदि चउदस रजनि रे सुत प्रशवे जयादेवि जननी रे हरखे सवि मेदनी सजनी रे जिनपति जगगुरुजी जाया रे दिशिकंमरीइं हलराया रे ॥१॥ अधोलोकवाशि दिशिकमरी रे जिन जन्म अवधिनांणे समरी रे आवी आठ तसें अमरी रे जिन० 11211 समीरे जोयण भूमि समारी रे ईशानें सुति घर विस्तारी रे उभी गुण गाइं ते सारी रे जि० 🛙 ।।३।। उर्द्धलोकथी आठ देवी रे आवी जल-फूलने वरसेवी रे भूमी योजनमित्त करेवि रे जि० 11811 पूर्व रुचकथी आठ देवी रे आठ दर्पण हाथमां ल्यावी रे प्रणमि पूर्व दिशिं ठावी रे जि० 1411 दक्षिण रुचकथी दिगकन्या रे

चउद स्वप्न देखी जागीया जया राणीजी तेहनो अरथ सुणी साच मन हरखांणी जी

चउद सुपन महोच्छव कियो रतनचंदेजी

www.jainelibrary.org

वाय विंजणें हाथ सोहावे रे ते दिशि रहि जीनगुण गावे रे जि० ାାତା। चामर चत्रा अड धरती रे उत्तर रुचकथी अवतरति रे दोइं नमि भवदूख हरती रे जि० 11211 च्यार विदिशि थकी दिशिसुरी रे दीपक कर कांति पूरी रे प्रभुनु मुख जीवा सनुरी रे जि० 11911 मध्य रुचकनी च्यार देवी रे नालच्छेदनि किरिया करेवि रे खांनि रतनपुरीत धरेवि रे जि० 112011 केलनां घर त्रिणें विरचि रे नवरावे पहेराविं अरचि रे जनम मंदिर थापे चरचि रे जि० ॥११॥ छपन दिशिं कुंमरी जेहवो रे ग्तनमा करे ओछव तेहवो रे यश तसु बहुमांनें केहवो रे जि॰ ॥१२॥ ॥ ढाल ॥ [७] ( पुण्ये विमळा दोहला रे जया सफला होय - ए देशी ॥ ) अवधिनांणे जांणीओ रे सोहमपति जिन जन्म घंट सुधोषा वजडावीयो कांइ सेनानी सेनानीनो ए कांमतो जन्माभिषेक करो प्रांणीया ए 11811

11211

आठ कलश ग्रहि धनमन्या रे

आत पश्चिम रुचकथी आवे रे

जिन माय नमि गीत भण्या रे जि०

एकोन बत्रिस लाखना रे घंटनाद विशाल निसुणि परीकर परवर्या कांइ आवे ए आवे ए इंद्र अनुसार तो ज० ॥२॥

पालक मुंकी नंदिस्वरे रे बीजुं रंचिय विमांन मंदिर जिन जननि भणि कांई त्रिण ए त्रिण ए प्रदक्षणा दान तो ज० ॥३॥

इंद्र कहे जिन जनम महोछव करवो जे तुझ जात अवस्वापिनि प्रतिबिंब ठवी पंचरूपें ए पंचरूपें ए ग्रहे जगतात तो ज० ॥४॥

मेरू पंडुकवन विषे रे लेई उछंगे स्वामि शऋ सिंहासन बेसीने कांई भक्तिथी भक्तिथी सेवन कांम तो ज० ॥५॥

इम निज निज थांनक थकि रे आविया चोसठ इंद पेहेलो अभिषेक आदरे कांई मनमोदें ए मनमोदे अच्युत इंद तो ज० ॥६॥

सेवक सुर आदेशथी रे लावे तीरथनां नीर चंदन फुल कलश घणां कांई मेले ए मेले ए जिनवर तीर तो ज० ॥७॥

नाटक गीत मोटे स्वरे रे वाजित्रना धौंकार थेई थेई सुरनारि करे रे कांई भूषण भूषण नो झलकार तो ज॰ ॥८॥

त्रेसठ सुरपति स्नात्र महोछव किधो मन उल्लास ईशांन पंच रुपें करी कांई अंके ए अंके धरे जिन खास तो ज० ॥९॥

তা০

তা০

তত

112011

118811

118211

करे सनाथ जगनाथनुं कांइ निरमल निरमल जिनवर नुर तो

करे स्तवना वासुपूज्यनि कांई आणी ए आंणिने भाव समीप तो

सोहम वसह नें च्यार रूपें रे आठ सिंगे पयपुर

मंगल आठ आलेखियां रे आरति मंगल दीप

नमि स्तवि सोहमधणि रे मात पासे ठवंत

महोछव चोसठ इंद्रनो रे रचिओ मनने उदार मननगरनं सिन भगनगरे नांई स्रोनो म सोन्रो म सीशो २

हेम रयण वृठि करी कांई ठांमे ए ठांमे ए निज उलसंत तो

रतनसाइं निज धनतणो कांई लोहो ए लोहो ए लीधो अपार तो ज० ॥१३॥

सुगंध चूर्णादिकतणां रे आठमें वासर सार अढार सनाथ ते नवनवा रे कांइ किधां ए किधां ए मंत्र उचार तो ज० ॥१४॥

#### ढाल ॥ [८]

( पीठी चोले पीठी चोले य(वीसराणी ?) ए देशी ॥ ) अतिसय सहेजना च्यार रे लक्षण अंग अपार रे आठ एक सहस विराजे रे अमीय अंगुठडे छाजे रे ॥१॥ त्रिभुवन आनंद कंद रे कांइ कांति वधे जिम चंद रे भणवा योग वय जांणि रे निशाले ओछव आंणि रे ॥२॥

पाठिक दिलना संदेह रे टाले अवधिथी तेह रे त्रणस्यं ज्ञाने निरमला रे मुख मुख वाणि रशाला रे 11311 यौवन प्रभुजीने देह रे धारे मातपीता म-मेह रे पद्मावति राजकन्या रे सम्मुख आवी लावण्या रे 11811 सभ वेला शभ लगने रे जोवे विवाह सुर गगने रे इंद्र इंद्राणी ओहीनांणे रे करे (वीनती ?) तेह टांणे रे 1411 मोक्ष रोधी भोगकर्म रे भेदेवा करग्रह मर्म रे कामिनी करवाल साही रे कांमे आण मनाइ रे 11311 पहेलू मंगल होवे रे लाख त्रंगम देवे रे बीजू मंगल आवे रे गज बहला प्रभुने आवे रे ॥७॥ त्रिज़ं मंगल वरते रे कोडी भूसण दान देवे रे मणिमुगता फल - - - -चोथे मंगल - - - - ॥८॥

# पद्मावति सुत जायो रे मघवा नाम गवायो रे सतनी सता पुण्यवंति रे रोहिणी अशोक विलसंति रे ॥१०॥ जन्मथी वरस अढार लक्ष रे कर्म फल जांणि नांणे प्रत्यक्ष रे जया-वसपुज्य समझावी रे संयम दिलमांहे लावि रे ॥११॥ ढाल ॥ [९] ( वीर वखांणि रांणि चेलणाजी - ए देशी ॥ ) पंचम स्वर्गथी आवीयाजी देव लोकांतिक जेह वीनती करे वासुपृज्यनें जी संयम लहो गुंण गेह ॥१॥ .वसुपूज्यनंदन वंदिइंजी ॥ दांन संवच्छर देइनेंजी खटसय नखर साथ अमावासि फागुणनीं भलीजी दीक्षा लीइं जगनाथ ॥२॥ व०।

विवाह ओछव कीधो रे मोटे मंडाणे जश लीधो रे

भोगवता पुन्य भाग रे ॥९॥

निरागपणें वितराग रे

सुरवर नरवर बहु मलिजी वाजित्रनो नही पार तुतिय कल्यांणिक इण परेजी रतनसा हर्ख उदार ॥३॥ व०। एह विधि नवमें दिवसें करयोजी अधिवासना सुखकार रजनी समें सदगुरु तिहांजी मंत्र पवित्र विस्तार ।।४॥ व० । प्रणवमय तीर्थनायक प्रभुजी अतिशय रयण भंडार त्रिभूवन पावन सुरतरुजी करो एह मुरति अवतार ॥५॥ व०। वरस दिवस छदमस्थपणेंजी विचरी लह्यं केवलनांण माहा सुदि बिज दीवसें भलोजी वरतता सुकलध्यांन ॥६॥ व० । अतिशय शोभा पूरण थइजी सकल पदारथ जांण गणधर संघनी थापनाजी बेठा त्रिगडे जीनभांण 1911 व० 1

#### ढाल॥ [१०]

(मोह्या मोह्या रे त्रिभुवन लोक गुरुनें बोलडीइं – ए देशी ॥) हिवें दशमें दीन अंजन सीलाका शुभ मुहुरत थीर योगे रें विधि सहीत करीइं उछरंगें द्रव्यभाव संयोगें अंजन शिलाका रे किजे किजे रे अति उल्लास प्रभु गुण धारी रे ॥१॥

42

सोविरंजन मांणिक्यवरणे कस्तुरी घृत सार रे घनसारादिक जोइइं वस्तु मेलवीइं मनोहार ॥२॥ अं० ॥ सोहव पंचनारी गुंणवंति ए अंजननें समारे रे कंचन भाजनमें ते थापें पवित्र पणो मन धारे ॥३॥ अं०॥ प्रतिष्ठा विधिनुं सार ए जांणि सुरीस्वर गुणधारी रे कंचन रुप्य सिलाका ग्रहीनें मंत्र स्वरोदय संभारी ॥४॥ अं०॥ केवलजान नें केवलदर्शन प्रगट्यो परम उद्योत रे थापना सत्य कही ठाणंग सुत्रे जिन प्रतिमा जिन होत ॥५॥ अं० ॥ वैशाख सदि नंदा तिथीं बिजी शशी सींह लगनें आवे रे मंवत अहार त्रेतालिस वरसें बेठ भग्वंत सोहावे ॥६॥ अं० ॥ लक्ष्मिस्रि ते समयें विनवें वासुपूज्य महाराया रे थिरभावें समोसरणें बेठा भगतवछल सुखदाया ॥७॥ अं० ॥ सर्वाभरणस्यं अंगि अनोपम रतनसा सर्व बनावे रे जनम सफल करवानें कारण समकित तत्व दीपावे 11८11 अं० 11 एकसों आठ जें तिखना जल सनाथ काव्य उचारे रे मंगल दीप नैवेद्य धरीने सिव कल्यांणिक धारे ॥९॥ अं०॥

> ढाला ॥ [११] ( आसणरा योगी ए देसी ॥ )

श्रीवासुपूज्य प्रभुने वयणे थया व्रतधारी संघ रे जिनवर गुणगेहा मुनीवर बहुतेर सहस सोभंता साधवी लक्ष निसंगा रे प्रणमो जिनराया ॥१॥ दोय लक्ख पत्रर सहस उपासक चउलक्ख बत्रिस सहसा रे जयासुत जयवंता ।

www.jainelibrary.org

सहजानंद पद थाय रे चिदानंद महेंदो 11811 पंचकल्यांणिकना बहु ओछव करीनें पडिमा थपावे रे श्रावक पून्यवंता रतनसा नितनीत नवलि भक्ति करता धर्म दीपावे रे शासन जयवंता 11411 जिन पतिमा जिनसरखि धारी सम्कित तत्त्व सुधारे रे अनुंभवना रसिया विजयसौभाग्यलक्ष्मीसूरि भावें प्रभुगुंण अनंत संभारे रे जिनमंदिर वसीया ાદા ढाल ॥ १२] ( आवो आवो रे सयणां भगवति सुत्रने सुणीइं - ए देशी ॥ ) श्रीजीनमंदिर तखते दिवाजे वासुपूज्य जयवंता प्रासाद बिंब प्रतिष्ठा ओछव रतनसा हरखें करंता। भवि तुमे वंदो रे वासुपूज्य जिनराया 11211 मलकसा बांधव निज हेते ऋषभदेवनी प्रतिमा भूमिघरमां थपावे मोटो आनंद अधिको महिमा ॥२॥ भ०॥

श्राविका शिलवंति गुणवंति मनमां न पाप प्रवेशा रे संयम गुणवंता ॥२॥ चंपापुरीमां शिवपद पांम्या छसे पुरुष परवरीया रे अविनासी आनंदा आषाढ सुदि चउदिशि दिन लायक सादि अनंत अनुंसरीया रे सुख परम आनंदा ॥३॥ चोपन लाख वरस संयमधरी

सुखभर भोगवि आयु रे वसुपूज्य सुत वंदो

बहोत्तेर लाख वरसनुं निरूपम

श्रीवासुपूज्य प्रभुना गुण गावो मिथ्या दूरीत मिटावो रे मुगता फलना थाल भरीनें मुरति प्रभुनें वधावो रे ॥१॥ श्री०। सुख संपद गुंणग्यान विशाला सदद्हणा दिल लावो रे आनंद रंग रसाल महोदय पुण्य कारण प्रभु ध्यावो रे ॥२॥ श्री०। सुरतरु सुरमणि कामगवि शुभ कांमकुंभ जणावो रे पुण्यरतनागर जिन-प्रतिमानें त्रिभुवन वंदन आवो रे ॥३॥ श्री०।

देहरा उपर मनमोहनजी पास प्रभु पधरावे खरचे धन तस पूजा कांमे जिनशासन शोभावे ॥३॥ भ०॥ त्रिभुवनना जिन समरण काजे त्रिहुं ठांमे जिन छाजे जसु नांमे दुख दोहन भाजे संपद धर्म विराजे ॥४॥ भ०॥ धन **झकुंबाइ**नें कुखे उदया रतनचंद कुलचंदा जेहनें धननो लाहो लीधो पांमे महोदय वृंदा ॥५॥ भ०॥ संघ चतुर्विध साहमीवछल करतां मन नवि खोभे बहु पकवांन-मेवानि-वडाई दांन मांनें घणुं सोभे ॥६॥ भ०॥ याचक जन बहु याचवा आव्या पंच पसाउ ते पांम्या मेघतणी परें वरसें दांनें साधु भगति थिर धांमा ॥७॥ भ०॥

> **ढाल ॥** [१३] ( राग-धन्याशि ॥ )

पुत्र कलत्र हय गय रथमंदिर सुंदर धरमसुं दावो रे प्रभुपद भक्ति शक्तिथी लहीए नरभव पुण्य दीपावो रे ॥४॥ श्री० । श्रीविजयसौभाग्यसूरि तपागच्छे ते गुरुनो सुप्रभावो रे तस सीस प्रेमविजय स्तवना करी परमानंद सुख पावो रे ॥५॥ श्री० ।

कलश ॥

श्री वासुपूज्य जिनेंद्र साहिब थापीय जिन मंदिरें **रतनचंदे** मन आनंदे पुत्र कलत्र धन परीकरे थापना थापक तवन कारक रवि शशि लगे थीर रहो **प्रेमविजय** कहे प्रभुं पसायें सकलसंघ मंगल लहो ॥ १०॥

इति श्रीवासूपूज्य जिन स्तवनं संपूर्णं ॥ सं-१८५२ ना फागुण वदि १३ तिथौ रविवासरे पं. खिमाविजयगणिलिखितं श्रीस्यांणामध्ये स्वअर्थे ॥ विहारमध्ये ॥ इति श्रीप्रतिष्ठाविधिसूचकं स्तवनमे

5

शब्दकोश

| ढाल | कडी | शब्द                     | अर्थ                        |
|-----|-----|--------------------------|-----------------------------|
| १   | ٢   | शिलावट                   | सलाट                        |
| १   | ९   | पंचसूत्तर सित्तेर भागनि- | शिल्पशास्त्रना नियम प्रमाणे |
|     |     |                          | जिन प्रतिमाना मापनी विगत.   |
| १   | ९   | करण चरणनि सित्तरि        | जैन मुनिना आचारमां आवता     |
|     |     |                          | करणसित्तरी तथा चरणसित्तरी   |
|     |     |                          | शब्दो : आचार पालनना         |
|     |     |                          | नियमविशेष.                  |
| २   | २   | उकिठ                     | उत्कृष्ट                    |
| "   | Ę   | ग्रंथी                   | गांठ-गांठो                  |
| **  | **  | चउ बंसनें                | चार वांसने                  |
| "   | 8   | जवारका                   | जवारिया                     |
| **  | لم  | समोसरण                   | तीर्थंकरनी धर्मसभानुं स्थान |
| **  | 9   | पंचम अंगमां              | जैनागमोमांना ११ अंगसूत्रो   |
|     |     |                          | पैकी पांचमा अंगसूत्र-भगवती  |
|     |     |                          | सूत्रमां                    |
| **  | ९   | सोहव                     | संधवा : सौभाग्यवती स्त्री   |
| ş   | २   | सनाथ                     | स्नात्र                     |
| 8   | પ   | वीसथानिक तप              | ए नामनी एक विशिष्ट तपस्या   |
| ,,  | ૬   | तीर्थंकर गोत्र           | तीर्थंकर थवा माटे उपार्जन   |
|     |     |                          | करवा पडतां कर्मनुं नाम.     |
| **  | ,,  | प्राणत स्वर्ग            | १२ देवलोक पैकी १०मा         |
|     |     |                          | देवलोकनुं नाम.              |
| **  | દ્વ | वीस सागर                 | २० सागरोपम : सागरोपम ते     |
|     |     |                          | जैन कालगणनामां एक           |
|     |     |                          | कालविशेष छे.                |
|     |     |                          |                             |

| ጽ  | ९              | च्यवन कल्याणक     | तीर्थंकरना आत्मानुं स्वर्गमांथी<br> |
|----|----------------|-------------------|-------------------------------------|
|    |                |                   | अवतरण.                              |
| ષ  | १              | दिशिकुमरी         | 'दिक्कमारी' - ए नामे प्रसिद्ध       |
|    |                |                   | देवीओ छे.                           |
| "  | २              | अवधिनाण           | पांच ज्ञान पैकी त्रीजा ज्ञाननुं     |
|    |                |                   | नाम.                                |
| ** | ३              | सूतिघर            | प्रसूति पछीनी क्रिया करवा           |
|    |                |                   | माटे बनावेलुं घर.                   |
| ** | 8              | योजनमित्त         | १ योजन जेटली                        |
| ** | لر             | पूर्वरुचक         | पूर्वदिशानो रुचक नामनो              |
|    |                | ~                 | पर्वत.                              |
| ** | દ્             | दक्षिणरुचक        | दक्षिण रुचक पर्वत                   |
| "  | १०             | नालच्छेदनि किरिया | नवजात शिशुनी डूंटी परनी             |
|    |                |                   | नाल छेदवानी क्रिया.                 |
| ** | **             | खांनि रतनपूरीत    | खाडो करी (तेमां नाळ                 |
|    |                |                   | पधरावी) तेने रत्नोथी पूरी           |
|    |                |                   | देवानी क्रिया.                      |
| ξ  | Ę              | पालक              | ते नामनो देव तथा ते नामनुं          |
|    |                |                   | देव विमान                           |
| ,, | » <del>•</del> | नंदिस्वर          | ते नामनो आठमो द्वीप                 |
| ,, | 8              | अवस्वापिनि        | ते नामनी विद्या, जेना प्रभावे       |
|    |                |                   | बधां उंघी ज जाय.                    |
| "  | **             | प्रतिबिंब         | बाल तीर्थंकरनी प्रतिकृति.           |
| "  | لم             | पंडुकवन           | मेरु पर्वत परना वननुं नाम.          |
| ,, | १०             | सोहम              | सौधर्मइंद्र.                        |
| ,, | **             | वसह               | वृषभ-बळद                            |
| ৩  | . १            | अतिसय सहजना       | तीर्थंकरने जन्मतां ज प्राप्त थती    |
|    |                |                   | ४ अलौकिक विशिष्टताओ.                |
|    |                |                   |                                     |

| ৩  | <b>ર</b> | पाठिक           | पाठक-अध्यापक                     |
|----|----------|-----------------|----------------------------------|
| ٢  | १        | लोकांतिक        | ते नामना देव विशेष               |
| ** | २        | दान संवच्छर     | तीर्थंकर द्वारा देवातुं          |
|    |          |                 | वार्षिकदान                       |
| ** | 3        | तृतीय कल्यांणिक | त्रीजुं-दीक्षा कल्याणक: दीक्षा.  |
| ** | 8        | अधिवासना        | जिन प्रतिमानी प्राण प्रतिष्ठा    |
|    |          |                 | पूर्वे थती विशिष्ट क्रिया.       |
| ** | દ્વ      | छदमस्थपों       | केवलज्ञान प्राप्त कर्या पूर्वेनी |
|    |          |                 | मुनि-दशा.                        |
| ** | ,,       | सुकलध्यांन      | शुक्लध्यान नामे ध्यानविशेष       |
| ** | ৩        | गणधर            | प्रथम शिष्य                      |
| ** | **       | त्रिगडे         | त्रण गढवाला समवसरणमां            |
| ९  | १        | अंजनसीलाका      | मूर्तिने अंजन आपवानी क्रिया      |
| "  | २        | सोविरंजण        | अंजनचूर्ण माटेनुं एक द्रव्य      |
| ** | لر       | थापना           | प्रतिमा                          |
| ** | **       | ठाणंग सूत्र     | १२ अंगसूत्रो पैकी त्रीजुं अंग-   |
|    |          |                 | सूत्र                            |
| ** | ٢        | अंगि            | आंगी: अंगशणगार                   |
| ** | ९        | सिवकल्यांणिक    | मोक्ष                            |
| ११ | ६        | साहमीवछल        | साधर्मिकवात्सल्य: संघनुं         |
|    |          |                 | जमण                              |
| ** | ৩        | पंच पसाउ        | 'पांच पसाव' इनामनो प्रकार        |
| १२ | १        | मिथ्यादूरीत     | मिथ्यात्वरूपी दुरित-पाप          |
| ,, | ३        | सदहणा           | हढ श्रद्धा                       |
|    |          |                 | •                                |

 $\star$ 

# प्राकृत मुक्तक कविताना एक अमूल्य ग्रंथनी उपलब्धि **तारागण** महावादीन्द्र बप्पभट्टिसूरिकृत प्राकृत सुभाषित-संग्रह (शंकुक-संकलित)

हरिवल्लभ भायाणी

कवि बप्पभट्टि

जैन परंपरामां १३मी शताब्दीथी बप्पभट्टिसूरिनुं जीवनचरित्र मळे छे. जन्म गंगा-यमुना दोआबना एक गाममां. शिक्षण अने संस्कारग्रहण गुजरातना मोढेरामां. कार्यक्षेत्र मुख्यत्वे कनोज अने ग्वालियर. मैत्री अने आश्रय गुर्जर-प्रतीहार राजवी आम अपरनाम नागावलोक (एटले के नागभट्ट बीजा)नी साथे. एनो समय इ.स.७४४थी ८३९नो उत्तम कवि तरीकेनी शताब्दीओ सुधी ख्याति.

# सुभाषितसंग्रह 'तारागण'

प्राकृत सुभाषितोना कोश तरीके 'तारागण'नी परंपरागत ख्याति होवा छतां तेनी कोई हस्तप्रत जाणवामां आवी न हती, के तेना स्वरूप, विषय अने विस्तार विशे पण आपणे तद्दन अंधारामां हता. पण १९७० लगभग बीकानेरना एक हस्तप्रतभंडारमां तेनी एक हस्तप्रत सद्गत अगरचंद नाहटाना ध्यानमां आवी. सद्गत प्रकांड विद्वान आदिनाथ उपाध्येए 'तारागण'ना संपादनकार्यनो आरंभ करेलो. छेवटे ए अधूरुं रहेतां में पूरुं कर्युं छे.

'तारागण' मां शंकुक नामना कविए बप्पभट्टिसूरिना आशरे ११६ सुभाषित संगृहीत कर्यां छे. अनुराग (संयोग, विरह, स्त्रीरूपवर्णन), अन्योक्ति, सज्जन-दुर्जन, राज-चाटु जेवा परिचित विषयोने लगता सुभाषित प्राकृत मुक्तक कवितानी उच्च परंपरा जाळवे छे. एक तरफ हाल-सातवाहननी 'गाथा-सप्तशती' अने बीजी तरफ जयवल्लभकृत 'वज्जलग्ग' ए बेनी वच्चे 'तारागण'नो प्राकृत मुक्तकसंग्रह आवे छे. प्राकृत कविताना रसिक आस्वादको माटे 'तारागण' नूतन वानगीओनो रसथाळ नीवडे तेम छे.

'प्रभावकचरित' (इ.स. १२७८)ना 'बप्पभट्टिसूरिचरित'मां पूर्व परंपरानी सामग्रीनो उपयोग करीने आचार्य प्रभाचंद्रे बप्पभट्टिसूरिनुं जे विस्तृत चरित्र आप्युं छेते अनेक दृष्टिए महत्त्वनुं छे. तेमां बप्पभट्टिनी विद्वत्ता, बुद्धिचातुर्य, कवित्वशक्ति, प्रतिहार राजा आम नागावलोक साथे तेनी मैत्री अने राजा उपर तेनो प्रभाव, मानीनता वगेरे विविध चारित्रगुणो रोचक प्रसंगो द्वारा प्रगट थया छे. कल्पना, दंतकथा अने इतिहासनुं आवा चरित्रोमां मिश्रण तो होय ज, पण खास तो प्रभाचंद्रनी रचनाशक्ति अने चरित्रचित्रणनी शक्ति आपणी प्रशंसा मागी ले तेवी छे.

बप्पभट्टिनी कवित्वशक्तिना द्योतक होय तेवा अनेक प्रसंगो आपेला छे अने तेमना संदर्भमां बप्पभट्टिरचित अनेक संस्कृत, प्राकृत अने अपभ्रंश पद्यो आपेलां छे. ओगणचालीश जेटलां प्राकृत-अपभ्रंश पद्योमांथी केटलांक पद्यपूर्तिना परिणाम होईने आम राजा अने बप्पभट्टिनी संयुक्त रचना गणी शकाय.

प्रश्न ए छे के बप्पभट्टिने नामे अपायेलां आ पद्योने खरेखर तेमनी रचना गणवा माटे कोई बीजो तटस्थ अने श्रद्धेय पुरावो खरो ? बप्पभट्टिए 'तारागण', 'सरस्वतीदेवी स्तुति', 'शांतिदेवता स्तवन' वगेरे सहित बावन प्रबंधो रच्या होवानो चरितमां निर्देश छे. पण अत्यारे आपणने 'तारागण' अने 'सरस्वतीस्तुति' जेवी बेत्रण रचना ज मळे छे. एटले ज टांकेलां प्राकृत-अपभ्रंश पद्योना कर्तृत्वनो प्रश्न उपस्थित थाय छे.

टांकेलां पद्योमांथी एक अपभ्रंश पद्य अने एक प्राकृत पद्य हेमचंद्रे 'सिद्धहेम' व्याकरणमां टांकेलां अपभ्रंश उदाहरण-पद्योमां मळे छे. 'प्रभावकचरित', पृ. ८८ उपरनुं पद्य २१६ नीचे प्रमाणे छे.

> पइं मुक्काह वि वरतरु फिट्टइ पत्तत्तणं न पत्ताहं। तह पुण छाया जइ होइ तारिसी तेहिं पत्तेहिं ॥

आ ज पद्य थोडांक पाठांतरो साथे 'सिद्धहेम' ८, ४, ३७० नीचे उदाहरण माटे टांकेलुं छे. तेनो पाठ नीचे प्रमाणे छे.

> पइं मुक्काहं वि वरतरु फिट्टइ पत्तत्तणं न पत्ताणं । तुह पुणु छाया जइ होज्ज कह वि ता तेहिं पत्तेहिं ॥

'प्रभावकचरित' प्रमाणे आम राजाए अणबनावने कारणे चाल्या गयेला बप्पभट्टिने जे अन्योक्ति संदेशामां पाठवी हती, तेना उत्तर रूपे मोकलेली गाथाओमां एक उपर्युक्त गाथा हती.

आम राजानी अन्योक्ति अपभ्रंश दोहा रूपे छे. ते नीचे प्रमाणे छे.

छायह कारणि सिरि धरिअ , पच्चिवि भूमि पडंति । पत्तहं इह पत्तत्तण् (? णउं) , वरतरु काइं करंति ॥

अर्थ : तरुवरोए छाया अर्थे शिर पर धरेलां पत्रो पाकीने भूमि पर खरी पडे छे. पत्रोनुं आज पत्रत्व छे (तेमनो जातिस्वभाव छे); तेमां तरुवरो शुं करे ?

आना उत्तरमां बप्पभट्टि, कहेवरावे छे के 'हे तरुवर, ताराथी तजायेलां पत्रोनुं पत्रत्व कांई नाश पामतुं नथी, ज्यारे तारी एवी कोई छाया होय तो ते तारां पत्रोथी ज.'

आ रीते उपर्युक्त गाथा बप्पभट्टिना एक महत्त्वना जीवनप्रसंग साथे वणायेली होवाथी प्रस्तुत लागे छे. पण बीजे पक्षे 'प्रभावकचरित'मां बप्पभट्टिए रचेली सात गाथाओना जे प्रतीक आपेलां छे, तेमां आ 'पत्र' वाळी गाथानो निर्देश के प्रतीक नथी.

# 'तारागण'नी बेत्रण गाथाओनो अनुवाद

'जुओ, आ वर्षाकाळरूपी मालधारी आकाश-खेतरमां काळां वादळांनी भेंशोना धणने पवन-परोणे गोदावतो हांकी रह्यो छे.' (२६मी गाथा)

'जेटलो एने मारा पर प्रेम छे तेटलो प्रेम मारी पासेथी एने मळतो नथी-एवुं अमस्थुं ज पोताना मनथी मानी बेठेलां ए बने जण नकामां दूबळां पडी रह्यां छे. (७३मी गाथा)

ए पतिपत्नीनां मन दरेक बाबतमां संवादी होवा छतां, एक बाबतमां तेमनी वच्चे विसंवाद छे : ए तेने, स्वामिनी माने छे, तो ते पोताने किंकरी.' (७२मी गाथा).

# केटलाक अल्पज्ञात के अज्ञात मूळना गुजराती शब्दप्रयोगोनी चर्चा

हरिवल्लभ भायाणी

## खमण, खामणुं, छीणवुं

 खमण 'छीणीने करेलो छूंदो' ('कोपरानुं खमण')
 खमणवुं, खमणी ('खमणवानुं ओजार')
 सं. क्षि. 'क्षय थवो', 'क्षीण थवुं'; क्षपय् 'क्षय करवो', 'क्षीण करवुं'.

प्रा. खवय् ; क्रियावाचक नाम सं. क्षपण, प्रा. खवण > खमण.

 खामणुं 'खाबडुं', 'छीछरो क्यारो', 'वासण मूकवा सारुं करेली बेसणी'
 खमण उपरथी खामण 'कोतरी, खोदी खाडो करवो ; एवो खाडो' एवं मळ होय.

३. सं. क्षीण, प्रा. छीण, गुज. छीणवुं, छीणी, छीण. सं. क्षनो ख् करवानुं गुजरातीनुं सामान्य वलण छे. पण क्ष नो छ थयानां उदाहरण पण मळे छे, तो ते शब्दो एवा वलणवाळी बोलीमांथी (जेम के हिंदी, मराठी) आव्या होय. प्राकृतोमांनी परिस्थिति परत्वे जुओ पिशेलनुं प्राकृत व्याकरण परिच्छेद ३१७-३२३.

# $\star$

# घायां - पडघायां

- **घायां-पडघायां** (सं. **घात-प्रतिघात**, प्रा. **घाय-पडिघाय**). ('घायल थवाथी, डूबी जवाथी वगेरे कमोते मरेलां'; भादरवा वदी चौदशे एमनुं श्राद्ध कराय छे. **बाळांभोळां** ए एवी ज रीते नानां बाळक मरी गयां होय एमना श्राद्धनो रूढिथी मनातो दिवस छे.)
- पडघो, पडछंदो, पडजीभ, पडभींत, पडपूछ, पडिकमणुं वगेरेमां

सं. प्रति, प्रा. पडि परथी आवेलो पड के पडि मळे छे. प्राकृत माटे जुओ पिशेल, परिच्छेद २१९.

#### $\star$

#### जड

- १. जड 'अचेतन', 'लागणी, बुद्धि के स्फुर्ति विनानुं' (सं. प्रा. जड) जड परथी भारवाचक जडु (अपभ्रंशमां) ते परथी जाडुं (अर्थ-परिवर्तन; जेम हिंदी मोटा = 'जाडुं')
- २. जड 'मूळियुं'. जडमूळ (पर्यावाचक समास). सं. जटा, प्रा. जडा, जड (टर्नर, ५०८६). 'जड उखेडी नाखवी', 'जडथड', 'जडियुं', 'जडथुं' ('मूळाडियुं'). जडीबुट्टी एमां जडी 'औषधिना गुणवाळुं मूळियुं'-'चमत्कारिक गुणवाळुं मूळियुं'. टर्नर.
- जड 'खीली', 'स्रीओनुं नाकनुं घरेणुं'. कदाच क्रमांक २ वाळा जड परथी आ अर्थविकास थयो होय. सज्जडनो संबंध आनी साथे होवानुं जणाय छे.
- जड: जडवुं 'सज्जड बेसाडवुं', 'बेसणीमां नंग जोडवुं', (टर्नर, ५०९१).
- ५. जडवुं 'शोधतां हाथ लागवुं'. जडतुं 'बंध बेसतुं , मळतुं'. जडती लेवी मांनो जडती आनी साथे संकळायेलो हशे ?
- ६. जड वासवी 'हिंदुओना बाळकोने जनोई होवाना प्रसंगे के परणनाराओने, माथाना वाळमां फोइए वींटी बांधवी'. जडवासणुं आमां जड अने वासवुं नुं मूळ शुं छेते स्पष्ट नथी.

अज्जडनुं मूळ स्पष्ट नथी. बृगुको. मां देश्य 'उपपति, जार'नो अर्थ धरावता शब्दनी साथे तेने जोड्यो छे पण ए अटकळ निराधार छे.

#### $\star$

# जूठुं , एठुंजूठुं

55

- १. जूठुं 'खोटुं, असत्य'. जूठ, जूठाडुं , जुठाणुं ('जुठाणुं जलदी पकडाय, आखर जूठो जन पस्ताय'). भार देवा, उत्कटता दर्शाववा जुट्ठं वगेरे.
- जूठुं 'छांडेलुं अनाज', 'एंठुं, अजीठुं, उच्छिष्ट'. जमवुं-जूठवुं. टर्नर (ऋमांक ५२५५, ५२५६, ५२५७) प्रमाणे मूळ सं. जुष्ट, प्रा. जुट्ट 'वापरेलुं', 'वापरीने भ्रष्ट करेलुं', 'जेनो आस्वाद लीधो छे तेवुं'. गुज. जूठण 'छांडेलुं अनाज'. जूठण 'खेलमां एलेफल, जूठुं पण बोलनार ; रंगलो' (भवाईमां जूठणनो वेश).
- ३. एठुं( के एंठुं )जूठुं. आमां कोशो एठुंना तथा अजीठुंना मूळ तरीके सं. उच्छिष्ट, जूनी गुज. उछीठुं आपे छे, परंतु एम करवामां ध्वनिदृष्टिए घणी मुश्केली छे. जेनी पाछळ संयुक्त व्यंजन छे तेवा उ नो अ अने छ् नो ज् बन्यो तेनो खुलासो केम आपवो ?

#### $\star$

#### झाड, झाडवुं-झूडवुं

- १. झाड 'वृक्ष, छोड'; सं. झाट 'झाडी, झाड'. प्रा. जाडि 'वेलोनुं झूंड' (टर्नर, क्रमांक ५३६२). गुज. झाडी, झाडवुं, झाडखुं (व, ख स्वार्थिक प्रत्यय: जेम के व- लाडवो, कडवुं, ख- डाळखुं, माळखुं). जाट एटले 'जटाओनो, मूळनो जथ्थो' 'थृडियुं'. सं. जटा, अप. जड, गुज. जड 'मूळियुं'.
- झाडवुं 'वाळवुं', 'झापटवुं'. झाडवुं-झूडवुं (जेम झाटकवुं-झूटकवुं, झापट-झूपट) 'झाडीझूडीने घर साफ करवुं.' 'झाडु' (टर्नर, ऋमांक ५३२८). झूडवुं (ला.) 'सखत मार मारवो'.
- ३. झाडो 'दस्त'. ऋमांक २ ना झाडवुं साथे संकळायेलो छे के केम

नथी कही शकातुं. झाडे फरवा जवुं मां झाडे ऋमांक १ वाळो झाड कदाच होय. सरखावो, दिशाए जवुं.

झडि प्रा. 'निरंतर वृष्टि', 'वरसादनुं तोफान', गुज. झडी. एनुं मूळ जुदुं ज छे. (टर्नर, ऋमांक ५३२९).

#### $\star$

## पडछो

पडछो 'शेरडीने छेडेनो पांदडानो भाग'. सं. छद 'पांदडुं'. एटले प्रतिच्छद '(शेरडीना) मूळनी सामेनां, सामे छेटेनां पांदडां'. सं. प्रतिच्छद, प्रा. पडिच्छअ, गुज. पडछो. पडछो 'सहारो, आधार', पडछो न लेवो 'पासे न जवुं' (लाक्षणिक), पडछे नाखवुं के मूकवुं 'सरखामणी करवी' – एथी हुं अजाण छुं.

★

### Sporadic Notes on Some Terms from the Nrttaratnāvali

#### H. C. Bhayani

Numerous technical terms connected with drama, dance and music are quite obviously not Sanskritic. The source of their form and meaning was Prakrit, Apabharamśa or regional languages. But little has been written so far on the linguistic aspect of those terms.

Below a few such terms are discussed from the Nrttaratnāvali (NR.)

### अङ्गमोटन

In the description of Angika Abhinaya, occurs the term अङ्गमोटन (NR. p. 45, v. 177; p. 66, v. 341) 'turning the body aside and or stretching limbs' (in yawninig, laziness etc.) Pk. मोडइ, मोडना etc. (CDIAL. 10186 under **moțati**). तणुमोडि occurs in Apabhramsa. Compare Marathi अंगमोडा 'yawning and stretching the limbs'. See R. Shriyam 'A Critical Study of Mahāpurāna of Puspadanta', 1962. p. 73. no. 104)

#### ★

## कांस्यताल

Among the musical instruments कांस्यताल or कांस्य is mentioned several times. (See NR. Index of Important Words). In verse 28 on p. 206 in the शाङ्ख-कांस्यादि-संभृता मृदङ्ग-करटोद्भवा: the actual MS. reading is कांस्याल on which Raghavan has remarked in the footnote : कांस्याल is obscure.... the correct reading is likely to be कांस्यादि restored above.

But कांस्याल can be explained as Sanskritization of Pk. कंसाल 'cymbal, (made of bell-metal)'.

Jain Education International

### छोटिका

In the description of the Deśī Nṛtta Rāsaka is said that the dancuses dance giving rythmic clap in another's palm and giving छोटिकाs. Possibly छोटिका is the same as Hindi चुटकी 'clapping one's fingers'.

#### $\star$

#### तम्बट्ट

This musical instrument, mentioned in v. 147 on p.227 is a Copper drum, possibly the same as or allied to Pk. तंबक, Guj. त्रंबाळु.

# $\star$

# पैसार

In the description of the Deśi Nṛttas Peraṇi (Preraṇi) and Deśi, one of the dance movements is called पैसार (NR., p. 211, v.60; p. 214, v.72). The form should be पड्सार . It is an Apabhramśa word meaning 'entrance'. (See **Paumacariu I**, Index). It is a noun derived from पड्सार् (= प्रवेशय् ), causal of पड्स < Sk. प्रविश् . In NR., v. 60 and v. 72 the dancer is said to enter (प्रविश् ) in performing the पैसार . The verb पेसार and the corresponding noun पेसारे are current in Modern Gujarati.

#### ★

# रिगवणी, रिघोणी

In the description of Perani and Deśi, one of the dance movement is called रिगवणी (v. 59, 70) or रिघोणी (v. 71, 76).

Pk. रिग्ग्, रिग्घ्, रिंग्, रिक्ख्, रिंख् mean 'to crawl'. (See CDIAL. 10733, 10735, 10739). \* रिग्ग्व् and रिग्घव् would be causal bases, verbal nouns would \* रिग्गवण, \* रिग्घवण (neuter) \* रिग्गवणो, \* रिग्घवणी (feminine). These would develop as रिगवणी / रिगोणी, रिघवणी / रिघोणी in the NIA-stage. (Compare Marathi रिघणें 'to crawl'). In Prakrit there are instances in which a causal base is used in the same sense as the simple base, e.g. चिंत् , चिंतव् 'to think'. In the light of this रिगवणी, रिघोणी can be taken to mean 'crawling movement'.<sup>\*</sup> It should be noted that feminine verbal nouns in 'अणी are a characteristic of the NIA-stage.

#### **Reference Works**

- (1) H. C. Bhayani (ed.). Paumacariu of Svayambhū.
- (2) V. Raghavan (ed.). Nrttaratnāvalī of Jāya Senāpati, 1965.
- (3) R. L. Turner. Comparative Dictionary of the Indo-Aryan Languages (CIDAL).

<sup>\*</sup> The Deśi Nrita described after the Deśi is called पेखवण. But the correct form is पेक्खण (Pk.) < Sk. प्रेक्षण.